हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

अगस्त, 2005 वर्ष 4 अंक 6

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फ़ोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

दोनों जहानों का आराम

आसाइशे दो गीती तफ़सीरे ईंदोहर्फ़स्त
बा दोस्तां तलत्तुफ़ बा दुश्मनां मुदारा
(हाफ़िज़ शीराज़ी)

अर्थ : दोस्तों के साथ मिहरबानी तो चाहिए ही दुश्मनों के साथ भी अच्छा सुलूक हो। इन दो बातों से दुन्या में भी सुकून मिलेगा और आख़िरत में भी आराम हासिल होगा।

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना **वार्षिक** चन्दा जल्द भेजिए।

H.I.Computer Institute - 9335214913

विषय एक नज़र में

• और आप से	सम्पादकीय	3
• कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)	5
• प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	6
• हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नजर में	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी	9
• शिक्षा का अर्थ	मौ० अब्दुल माजिद दर्याबादी	12
• मौलाना अली मियां के एक बयान का एक इक्तिबास	....	13
• ह़ज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का अख्लाक	अल्लामा शिबली नोमानी	14
• संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	मौ० अब्दुस्सलाम किदवाई	17
• पन्द्रह अगस्त	मो० हसन अंसारी	19
• आज का नवजवान	गुफ़रान नदवी	21
• अल्लाह के दोस्त व ना दोस्त	मो० हसन अंसारी	24
• मंजूम अकाइद	मौ० फतेह मुहम्मद ताइब	25
• अल्लाह और रसूल की फरमांबरदारी	अब्दुर्रशीद खैरानी	26
• शैतान जिन्न से बचने की तदबीरें	अबू मर्गूब	28
• उर्दू शाअ़िरी में हिन्दू तहजीब	डा०एन० नसीम आज़मी	29
• कोल तथा द्रविड़ सभ्यता	इदारा	31
• आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	33
• हजरत मैमूना (रज़ि०)	सादिक़ा तस्नीम फ़ारूक़ी	34
• स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों की भूमिका	हबीबुल्लाह आज़मी	36
• यौमे आजादी (पद्य)	जिन्दा दिल	38
• इन्तिहाई गम, इन्तिहाई खुशी	इदारा	39
• जल्दबाजी बुरी है	इदारा	39
• अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	हबीबुल्लाह आज़मी	40

❑❑❑

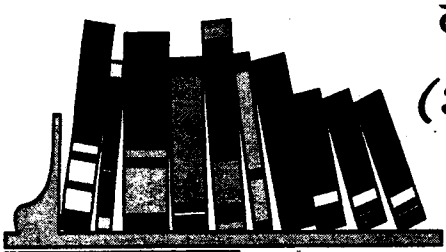

व यस्तअ़जिलनूक बिल् अ़ज़ाब (२२:४७)
(और आप से अ़ज़ाब में जल्दी चाहते हैं)

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

यह साबित करना तो आसान नहीं है कि महात्मा बुद्ध ख़ुदा के मुन्किर थे लेकिन उन के पैरौ कारों ने खुल कर (मआ़ज़ल्लाह) खुदा के वजूद का इन्कार किया है और अपनी लुचर दलीलों में एक दलील यह भी दी है कि ख़ुदा या ईश्वर होता तो हज़ारों बरस से चले आये मज़हबी झगड़ों का निपटारा ज़रूर कर देता।

कुछ दहरियों का भी कहना है कि मन्दिर तोड़ने वालों और बुत शिकनों के हाथ पांव भगवान ने नहीं तोड़े। मस्जिद गिरा देने वाले और मस्जिदों में जानवर बांधनें वाले फलते फूलते रहे तबाह व बरबाद न हुए। महात्माओं का बध करने वालों और बुज़ुर्गों को शहीद करने वालों का कुछ न बिगड़ा, मअ़्सूम (पाप रहित) बच्चों के क़ातिलों और हामिला (गर्भित) औरतों का पेट फाड़ देने वालों का देखने में कुछ न बिगड़ा न उन की आखें फूटीं न हाथ टूटे।

हां यह एअ़तिराज़ात शैतान सुझाता है और इन वसवसों से अल्लाह के ख़ास बन्दें चौंक पड़ते है, सचेत हो जाते है, और अपने रब को याद करते हैं और उस की याद में लीन हो जाते हैं लेकिन कुछ लोग इन शैतानी फन्दों में फंस कर रास्ते से हट जाते हैं और फिर गुमराह कुन एअ़तिराज़ात उठा कर हक़ से दूरी में इज़ाफ़ा ही कर लेते हैं।

ऐसे लोगों को जब गुज़रे हुए ज़ालिमों और उन के अंजाम (परिणाम) के वाक़िआ़त सुनाए जाते हैं तो शैतान उन्हें सुझाता है कि जिस तरह मां अपने बच्चे को फर्ज़ी हव्वा से डराती है उसी तरह यह मज़हबी लोग अल्लाह की पकड़ और अ़ज़ाब से डराते हैं. हक़ीक़त में ताक़त व हिक्मत ही अस्ल है लिहाज़ा ताकत पैदा करो और चालाकी वाली हिक्मत के गुर सीखो और उनके ज़रीअ़े दुन्या की इ़ज़्ज़त हासिल करो। दुन्या में अगर किसी को सज़ा मिल गई तो वह कहते हैं इत्तिफ़ाक़ से ऐसा हो गया ग़ैब (परोक्ष) में ऐसी कोई ताक़त नहीं है जो मुनज़्ज़म तौर पर (व्यवस्थित रूप से) ज़ालिमों को सज़ा देती हो। जिसे अल्लाह हिदायत न दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता लेकिन जिस के लिए अल्लाह ने हिदायत के रास्ते खोल दिये हैं, हर हर वाक़िअ़े पर और हर हर क़दम पर उस की आंखें खुल जाती हैं।

हज़रत उ़मर (रज़ि०) को शहीद करने वाला उसी वक़्त अपने हाथों जहन्नम रसीद हुआ, हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) को शहीद करने वाले अगर्चि राज़ में रहे फिर भी बाज़ का अंजाम इस दुन्या ही में बहुत बुरा हुआ और उन्हो ने ख़ुद ही ज़ाहिर किया कि मैं हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) के क़त्ल के गुनाह में शरीक था और आज मेरा यह हाल है। हज़रत अ़ली (रज़ि०) को शहीद करने वाले का बहुत बुरा हाल हुआ बहुत बुरी तरह उस को क़त्ल किया गया, हज़रत हुसैन (रज़ि०) के क़ातिलों को सज़ा देने के लिए अल्लाह तआ़ला ने मुख़्तार सक़फ़ी को भेड़िया बना कर भेज दिया, अगर्चि वह ख़ुद राहे रास्त पर न था लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उसके ज़रीअ़े से क़ातिलाने हुसैन को इस दुन्या में भरपूर सज़ा दी।

हक़ीक़त तो यह है कि इन्सान ने जो कुछ कमाया है उस का भरपूर बदला आख़िरत में मिलेगा और इस्लामी अ़क़ाइद में आख़िरत ही अस्ल चीज़ है लेकिन अगर ज़ालिमों को इस दुन्या

में बिल्कुल पकड़ न होती तो इस दुन्या का निज़ाम बिगड़ जाता। दुन्या में खुदाई पकड़ दुन्या का नज़्म ठीक करने के लिए है वरना अस्ल सज़ा तो आख़िरत की है पस वहां तो जो दोज़ख से बचा दिया गया और जन्नत में दाख़िला मिल गया हक़ीक़त में वही काम्याब है।

मगर अफ़्सोस जिन के पास आख़िरत का सहीह इल्म (ज्ञान) नहीं है या आख़िरत को मानते ही नहीं हैं जब तक किसी कुसूरवार (पापी) को इसी दुन्या में सज़ा पाते नहीं देख लेते वह पापों पर सज़ा ही का इन्कार कर बैठते है और धड़ल्ले से पाप करते और उस पर ख़ुशी भी मनाते हैं। लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से यह इन्तिज़ाम है कि कुछ पापियों को इस दुन्या में भी सज़ा मिलती है लेकिन वह किसे छोड़ता है, किसे पकड़ता है किसे यहां भी सज़ा देता है और वहां भी सज़ा देगा, किसे यहां बिल्कुल सज़ा नहीं देता लेकिन वहां उस के लिए सदा का जहन्नम है, किसे यहीं सज़ा है वहां सिर्फ़ इन्आ़म है इन ज़ाब्तों को समझ सकना इन्सानी अ़क़्ल के लिए दुश्वार है। ईमान वालों को चाहिए कि बस वह अह़काम बजा लाएं इस राह में जो तक्लीफें आएं उन को बर्दाश्त करें जो बात अ़क़्ल न उठा सके उस को अल्लाह के ह़वाले कर दें, वह भलाइयों का भी पैदा करने वाला है और बुराइयों का भी, उसके कामों के बारे में कोई सुवाल नहीं उठाया जा सकता।

बेशक अमरीका ने सारी ह़दें पार कर लीं। उसके मज़ालिम को वेतनामियों से पूछो, उस के अत्याचार को हीरो शीमा और नागासाकी वालों से पूछो, उसकी बरबरीयत अफ़्ग़ानिस्तानी दीनदारों से पूछो, उस के ज़ुल्म की इन्तिहा इराक़ में देखो, उसकी शैतनत तालिबानी और इराक़ी क़ैदियों के साथ देखो अब उस ने क़ुर्आने मजीद की बेह़ुर्मती का बदतरीन गुनाह भी अपने सर ले लिया।

यह सहीह है कि उसके फ़ौजियों की इस ह़रकत से सारी दुन्या के मुसलमानों को बहुत ज़ियादा तकलीफ़ हुई। सारी दुन्या में इह़तिजाजात (विरोध प्रकाशन) हुए लेकिन अमरीका जहां था वहीं हैं। कितनी ज़बानों से यह निकला कि उन फ़ौजियों की आखें क्यों न फूट गईं, उनके हाथ क्यों न टूट गये।

मेरे भाइयो ! सब्र करो सब कुछ होगा और इस से कहीं ज़ियादा होगा। हमारे लिए ह़ुक्म है कि कोई मुन्कर देखो तो ताक़त हो तो अपने हाथ से मिटा दो। यह मुम्किन न हो तो ज़बान से उस की मुख़ालिफ़त करो, यह भी न हो सके तो दिल में बुरा जानो और यह सब से कमज़ोर ईमान है। पस इस का अफ़्सोस ज़रूर है कि आज दुन्या की बड़ी ताक़तें अमरीका से टक्कर लेने की ताक़त नहीं रखतीं तो हम मुसलमान उस ज़ालिम पर ह़मला कर के उस की ना हंजार (दुष्ट) फ़ौज को उस के किये का सबक़ कहां दे सकते हैं। अलबत्ता हमने ज़बान से उसकी बुराई का एअ़लान किया। इस में भी शक नहीं कि हमारे भाइयों ने रब्बुल आलिमीन से भी फ़रयाद की है कि ज़ालिम अगर ताइब व नादिम न हो तो तू उसको सजा दे। और यक़ीन जानो कि उन ज़ालिमों को सज़ा मिल कर रहेगी। कोई ज़रा तह़क़ीक़ तो करे कि वेतनामियों, नागासाकियों और हीरोशीमा के रहने वालों पर ज़ुल्म ढाने वालों का क्या ह़श्र हुआ। हम मुसलमानों का यही मानना है कि अफ़्ग़ानिस्तान और इराक़ को तबाह करने वाले जालिम बुश और उसके मुआविनीन (सहायकों) को और कुरआन करीम के साथ बे अदबी करने वालों और "फ़ुर्क़ानुलह़क़" से ईमान वालों को भटकाने की कोशिश करने वालों को अगर उन्हों ने तौबा न की तो आख़िरत में तो उन्हें अज़ाब का सामना करना ही है इस दुन्या में भी उनका अंजाम बुरा होगा खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मुन्किरीन तन्ज के तौर पर अ़ज़ाब में जल्दी चाहते थे जिसकी खबर कुर्आने मजीद में मौजूद है "व यस्तअ़जिलूनक बिल् अ़ज़ाब" लेकिन आज के मुन्किरीन को मालूम होना चाहिए कि मस्लहतन देर तो हो सकती है लेकिन अन्धेर ना मुम्किन है।

उसी ने किया ख़ल्क़ हर ख़ैर व शर नहीं फ़िअ़ले बद से वो राज़ी मगर
बुरों पर यहां भी रहेगा इताब वहां पर जहन्नम में होगा अ़ज़ाब

कुरआन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

फित्ना व फसाद (उत्पात)

और जमीन में फसाद फैलाते मत फिरो। बकर:६०

इस्लाम अम्न व सलामती का मजहब है। वह दुन्या में सुकून और चैन देखना चाहता है। उसका हुक्म है कि दुन्या में फित्ना व फसाद मत फैलाओ।

हम को ऐसे कामों से बचना चाहिए जिनसे खुदा की मख्लूक परेशान हो, आपस में फूट पड़े और बुराइयां फैलें और ऐसे अच्छे कामों में शरीक होना चाहिए जिससे दुन्या में सच्चा अम्न काइम हो, लोगों को सच्चाई और असली चैन नसीब हो।

खुद पसन्दी (स्वेच्छाचारिता)

तुम अपनी पाकी (पवित्रता) बहुत न जताया करो परहेजगारों (संयमीयों) को वही खुब जानता है। (नज्म:३२)

हम को अपनी बड़ाई और पाकीजगी न जताना चाहिए। जो लोग पाक साफ और कमाल वाले है वह हमेशा अपने को दूसरों से कम जानते हैं।

जब आदमी बुजुर्गी, कमाल (कौशल) को खुद अपनी पैदा की हुई चीज समझता है तब ही खुद बीनी (अहकार) व खुद पसन्दी (स्वेच्छाचारिता) का रोग पैदा होता हैं। इसी लिये कुर्आन ने कहा है:

खुदा ने जो दिया उस पर इतराओ नहीं (हदीद: २३)

अगर आदमी यह ख़याल करे कि यह सारा हुनर व कमाल अल्लाह की देन है तो इस बीमारी से बचा रहे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कियामत की निशानियों में से यह भी बताया है कि उस वक्त हर शख्स को अपनी राए भली मालूम होगी उसी पर नाज करेगा और इतराएगा।

एक बार आप के सामने किसी का जिक्र हुआ तो एक शख्स ने उस की तारीफ की आप ने फरमाया तुम ने उसकी गरदन काट ली। अगर किसी की तारीफ ही करना हो तो कहो मै उस को ऐसा समझता हूं।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तारीफ से इस लिये सेका कि इस से जिसकी तारीफ की जाती है उस के दिल में खुद पसन्दी पैदा होती है।

इहसान रखना

ऐ ईमान वालो तुम अपनी खैरातों को इहसान जता कर और सताकर बरबाद न करो। (बकर: आयत २६४)

खुदा की राह में जो सखावत की जाए वह सच्ची नीयत से होना चाहिए उस की गरज यह न हो कि लोगों पर इहसान धरा जाए या उससे कोई बदला चाहा जाए।

हम किसी के साथ भलाई करते हैं तो उसकी दो ही सूरतें है, या अल्लाह के लिए करते हैं या अपनी किसी गरज के लिए करते हैं। अगर अल्लाह के लिए करते हैं तो बन्दे पर हमारा कोई एहसान नहीं है उससे बदले की उम्मीद न रखना चाहिए और अगर अपनी गरज के लिए करते है तो यह भलाई बाकी न रही, खुदा ने फरमाया: "एहसान करके बहुत बदला न चाहो।" (मुद्दस्सिर:६)

बुख्ल:—

अल्लाह किसी इतराने वाले शैखी बाज से महब्बत नहीं करता जो खुद बुख्ल (कंजूसी) करते हैं और लोगों को भी बुख्ल की तालीम देते है। (हदीद: २३,२४)

आदमी के पास दौलत मौजूद हो लेकिन उस को सहीह जगह पर खर्च न करे यह बुख्ल है। यह ऐसी खराब आदत है कि इस से दूसरी बुराईयां जैस खियानत, बददयानती, बे मुरूवती, लालच और इसी तरह की दूसरी बुराइयां पैदा होती हैं। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरमाते थे कि मोमिन में दो चीजें जमा नहीं हो सकती है, एक बुख्ल दूसरे बद अख्लाकी। हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरमाते थे कि खुदाबन्दा! मैं कसल्मन्दी, बहुत बुढ़ापे की उम्र, कब्र के अजाब और जिन्दगी और मौत की आजमाइश से तेरी पनाह मांगता हूं। जो आदमी दौलत जोड़ जोड़ कर जमा करता है, उसी में दिल लगाये रहता है कुर्आन ने उसका अजीब नक्शा खींचा है। फरमाया: जिसने इकट्ठा किया माल को, और उसको गिना किया, समझता है कि उसका माल उसको हमेशा जिन्दा रखेगा, ऐसा हरगिज नहीं

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

सब्र की फजीलत

हजरत अबु मालिक (र०) बिन आसिम अलअश्अरी से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तहारत निस्फ ईमान है। और अल्हम्दु लिल्लाह तराजू को भर देता है। और सुब्हानल्लाह वलहम्दु लिल्लाह भर देते हैं जो कुछ आसमान जमीन के दर्मियान है और नमाज नूर है, सदकः दलील है, सब्र रोशनी है और कुर्आन हुज्जत है तुम्हारे हक में या तुम्हारे खिलाफ। हर शख्स हर रोज अपने नफ्स का सौदा करता है; या तो उसको आजाद कर लेता है या उसको हलाक कर देता है। (मुस्लिम)

सब्र से जियादा किसी चीज में भलाई की गुन्जाइश नहीं

हजरत अबु सअीद (र०) सउद बिन मालिक बिन सिनान खुदरी से रिवायत है कि चन्द अन्सारियों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया; आपने उनको दिया फिर उन्होंने मांगा, फिर आपने दिया यहां तक कि जो कुछ आप के पास था सब दे दिया। फिर फरमाया– मैं तुमसे कुछ उठा नहीं रखता, जो खुद्दार रहना चाहेगा अल्लाह उसको खुद्दार रखेगा और जो इस्तिग्ना चाहेगा अल्लाह उसको गनी करेगा और जो सब्र करेगा अल्लाह उसको सब्र देगा और किसी को कोई चीज सब्र से जियादा बेहतर और वसीअ नहीं दी गयी। (बुखारी, मुस्लिम)

सब्र व शुक्र

सुहैब बिन सिनान (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया–मोमिन का मुआमला भी खूब है, यह मोमिन ही की खुसूसियत है कि जब उसको खुशी पहुंचती है तो शुक्र करता है पस उनके लिये बेहतर करता है और जब मुसीबत पहुंचती है तो सब्र करता है तो यह उसके लिए बेहतर होता है। (मुस्लिम)

मरज़े वफात की बेचैनी और सब्र

हजरत अनस (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बीमार हुए और आपको बेचैनी हुई तो हजरत फातिमः (रजि०) ने कहा कि मेरे वालिद कैसे बेचैन है? आपने फरमाया इसके बाद तुम्हारे वालिद कभी बेचैन न होंगे। जब आपकी वफात हो गयी तो हजरत फातिमः (रजि०) ने कहा ऐ बाप! आपने अपने रब की दावत को कुबूल किया, ऐ बाप! जन्नतुल्फिर्दौस आपका ठिकाना है, ऐ बाप! हम जिब्रील को आपकी वफात की खबर देंगे। जब आप दफ्न किये गये तो हजरत फातिमः (र०) ने लोगों से कहा, तुमको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मिट्टी डालना कैसे अच्छा लगा। (बुखारी)

हजरत उसामः (र०) बिन जैद बिन हारिसः खादिम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके महबूब और महबूब के बेटे से रिवायत है कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम की एक साहबजादी ने आपके पास पैगाम भेजा कि मेरा बेटा करीब मर्ग है, आप तश्रीफ ले आइये। आपने सलाम कहला भेजा और फरमाया अल्लाह ही के लिए है जो उसके लिया और जो उसने दिया और हर चीज का उसके पास एक वक्त मुकर्रर है। सब्र करो और अज्र तलब करो। उन्होंने दर्ख्वास्त की, आप जरूर तश्रीफ लाइये। यह सुनकर आप खड़े हो हगये और आपके साथ सअ़द बिन अुबादः (र०)। मआज बिन जबल (र०) और उवइ बिन कअब (र०), जैद बिन साबित (रज़ि०) और बहुत से लोग थे। आपको बच्चा उठाकर दिया गया, आपने गोद में लिया, और उस वक्त वह दम तोड़ रहा था, आपके आसू निकल आये। हजरत सअ़द ने कहा या रसूलल्लाह यह क्या? फरमाया यह रहमत है, अल्लाह तआला ने इसको अपने बन्दों के दिलों में रक्खा है। (बुखारी, मुस्लिम)

हक पर सब्र व इस्तिकामत की मिसाल

हजरत सुहैब (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया –अगली कौम में एक जादूगर था। जब वह बूढ़ा हुआ तो बादशाह से कहला भेजा कि मैं बूढ़ा हो गया हूं, एक लड़के को भेज दीजिए तो मैं जादू सिखा दूं। बादशाह ने एक लड़के को उसके पास भेज

दिया, वह हर रोज साहिर के पास जाने लगा। रास्ते मे एक राहिब का मकान पड़ता था लड़का उसके पास आने जाने लगा। कुछ देर उसके पास बैठना और उसकी बाते सुनना उसका मामूल हो गया। एक दिन साहिर ने ताखीर पर उसको मारा, उसने राहिब से शिकायत की। राहिब बोला, जब तुझे साहिर से डर हो तो कह दे मुझे मेरे घर वालों ने रोक लिया था। और जब घर वालों से डरना तो कहना मुझे साहिर ने ठहरा लिया था। उसने यही किया और बराबर इसी हालत से आता जाता रहा। एक दिन एक बड़ा जानवर रास्ते में आ गया, जिससे लोगों की आमद व रफ्त बन्द हो गयी। लड़के ने कहा आज के दिन मैं जानूंगा कि साहिर अफ़ज़ल है या राहिब। एक पत्थर उठाकर कहने लगा, ऐ अल्लाह! अगर राहिब का काम साहिर के काम से अच्छा है तो इसको कत्ल कर ताकि लोग अम्न के साथ गुजर जायें। यह कह कर पत्थर फेंका और उसको कत्ल कर दिया, रास्ता साफ हुआ तो लोग अम्न के साथ गुजर गये। यह राहिब के पास आया और उसको इस किस्म की खबर दी। राहिब बोल उठा, मेरे बेटे! तू मुझसे भी अफजल है। तेरा मुआमल अब हद को पहुंच गया। मेरा ख्याल है कि अन्करीब तू आजमाया जायगा, पस अगर तू आजमाइश में मुब्तला किया जाये तो मेरा पता न देना।

खुदा ने उस लड़के के हाथ में ऐसी शिफा दी थी कि वह मादरजाद अन्धों का, कोढ़ी का और तमाम अमराज का अिलाज करता था और लोग शिफा पाते थे। धीरे–धीरे यह खबर मशहूर हो गई। उसको बादशाह के एक हमनशीन ने भी सुना जो नाबीना था। वह बहुत से तहाइफ लेकर, उसके पास आया और कहने लगा, अगर तू मेरी आंखे अच्छी कर दे तो यह सब तेरे लिए है। लड़के ने कहा कि मैं किसी को शिफा नहीं देता, शिफा देने वाला अल्लाह है। अगर तू अल्लाह पर ईमान ले आये तो में अल्लाह तआला से तेरे लिए शिफा की दुआ करूंगा। वह ईमान ले आया तो अल्लाह तआला ने उसकी बसारत पलटा दी। वह बादशाह के पास आया और हस्बमामूल बैठ गया। बादशाह ने कहा, तेरी आंख किसने अच्दी की। कहा, मेरे परवरदिगार ने। बादशाह ने कहा, मेरे सिवा भी कोई परवरदिगार है? वह बोला, मेरा और तेरा परवरदिगार अल्लाह तआला है। बादशाह ने उसको सख्त अजाब में मुब्तला किया; यहां तक कि उसने लड़के का पता दिया। बादशाह ने लड़के को बुलाया और कहा तेरा सेहर इस हद को पहुंच गया कि तू मादर जाद अन्धे और मब्रूस को अच्छा कर देता है। कहा मैं किसी को अच्छा नहीं कर सकता, शिफा देने वाला तो अल्लाह तआला है। बादशाह ने लड़के को इतनी तकलीफ दी कि उसने राहिब का पता बता दिया। बादशाह ने राहिब को बुलाया और कहा अपने दीन से पलट। राहिब ने इन्कार किया। बादशाह ने आरा मंगवाया और उसको राहिब के सर की मांग में रखकर सर के दो टुकड़े कर दिये। फिर हमनशीन से कहा – अपने दीन से पलट, उसने भी इन्कार किया। उसके सर के भी दो टुकड़े कर दिये, फिर लड़के से कहा अपने दीन से पलट उसने भी इन्कार किया तो बादशाह ने अपने खुद्दाम को बुलाया और कहा कि फलां पहाड़ पर ले जाओ और जब पहाड़ की चोटी पर पहुंचना तो इससे दीन के बारे में कहना, अगर अपने दीन से पलट जाये तो खैर वरनः इसको गिरा देना। वह उसको ले गये और पहाड़ की चोटी पर चढ़ाया। लड़के ने कहा ऐ अल्लाह तआला तू जिस तरह चाहे उनसे निपट ले। यह कहते ही पहाड़ कांपा और सब गिर पड़े, लड़का बादशाह के पास आया। बादशाह ने कहा कि तेरे साथी क्या हुए? कहा, अल्लाह तआला ने उनसे समझ लिया और मेरा कुछ न कर सके। बादशाह ने उसको दूसरों के हवाले कर दिया और कहा कि इसको कश्ती में ले जाओ और जब बीच दरया में पहुंचे तो इससे दीन के मुतअल्लिक कहो। अगर यह अपने दीन से पलट जाये तो खैर वरनः दरया में छोड़ देना। लोग ले गये और जब वस्त दरया में पहुंच गये तो लड़के ने कहा, ऐ अल्लाह जिस तरह चाहे इनकी बला मुझसे टाल। कश्ती डगमगाई और वह सब डूब गये। लड़का बादशाह के पास आया। बादशाह ने कहा, तेरे साथी कहां रहे? लड़के ने कहा कि खुदा ने मेरी मदद फरमायी और उनको दफअ किया। फिर लड़के ने कहा कि तू मुझको नहीं मार सकता जब तक कि मेरे कहे पर अमल न करे। बादशाह ने कहा, वह कैसे? लड़के ने कहा लोगों को एक चटियल मैदान में जमा करो और मुझको एक खजूर की पेड़ी में सूली पर चढ़ा दो और एक तीर अपने तरकश से लेकर उसको कमान के वस्त में रक्खो और कहो कि मैं लड़के के रब के नाम से शुरू करता हूं, तो

इस सूरत में तुम मुझको मार सकोगे। बादशाह ने लोगों को एक चटियल मैदान में जमा किया और उसको खजूर की पेड़ी पर सूली दी। फिर एक तीर अपने तरकश से लेकर उसको कमान की वस्त में रक्खा और कहा कि मैं लड़के के रब के नाम से शुरू करता हूं; फिर उसको मारा। तीर उसकी कनपटी में लगा, उसने अपनी कनपटी पर हाथ रक्खा और मर गया। पस लोग बोल उठे–हम लड़के के रब पर ईमान लाये। लोगों ने कहा लीजिये जिसका आपको डर था वही सामने आया लोग ईमान ले आये। बादशाह ने कहा सड़क के किनारे एक खाई खोदी जाये और उसमें आग भड़काई जाये, फिर जो अपने दीन से न पलटे तो उससे कहा जाय कि इसमें कूदो। यही किया गया। एक औरत आई और उसके हाथ में उसका बच्चा था। औरत उसमें कूदने में हिचकिचाई। बच्चे ने कहा, ऐ मां! सब्र कर, बेशक तू हक पर है। (मुस्लिम)

हहजरत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक औरत के पास से गुजर हुआ जो एक कब्र के पास रो रही थी। आपने फरमाया अल्लाह से डर और सब्र कर। उसने कहा, आप अपना रास्ता पकड़िये, मेरी तरह अगर आपको मुसीबत पहुंचती तो आप जानते। लोगों ने उससे कहा वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे, तो वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवाजे पर आयी और वहां दरबानों को न देखा कहने लगी मैंने आपको नहीं पहचाना था। आपने फरमाया, सब्र पहली चोट के वक्त होता है।

महबूब के सदमे पर सब्र का सिला

हजरत अबू हुरैर (र०) से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया–अल्लाह तआला फरमाता है मेरे उस मोमिन बन्दे के लिए जन्नत के सिवा क्या और सिला हो सकता है कि जिसके महबूब को ले लूं और वह सवाबें आखिरत की ख्वाहिश पर सब्र करे। (बुखारी मुस्लिम)

ताऊन में सब्र और अज्र की ख्वाहिश के साथ मौत

हजरत आयशः (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ताऊन के मुतअल्लिक सवाल किया। आपने फरमाया कि वह अजाब है। अल्लाह तआला अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है भेजता है। अल्लाह तआला ने इसको मोमिनों के लिए रहमत बना दिया। जब किसी बन्दे पर ताऊन वाकिअ हो और वह अपने शहर में अज्र तलब करते हुए ठहरा रहे और यह समझ ले कि उसको कोई मुसीबत न पहुंचेगी मगर जो अल्लाह ने उसके लिए लिख दी, तो उसको शहादत का दर्जः मिलेगा। (बुखारी)

(पृष्ठ ११ का शेष)

जाकर तवाफ भी करना है जो समस्त तवाफों में, जो अभी तक किये और आगे किये जायेंगे उन सबसे महत्वपूर्ण हैं। कुरबानी करने और सिर के बाल मुंडवाने के बाद एहराम उतर गया, अपनी पसन्द के वस्त्र धारण कर लिये, अब खुदा को याद करना है, खाना पीना है, मित्रों से मिलना जुलना है, दुनिया के कोने कोने से आये हुए मुसलमानों से परिचय प्राप्त करना है, अपने तथा मानव जाति के कल्याण हेतु चिन्तन करना है। हज का बड़ा अंश समाप्त हो गया। दो दिन मिना में ठहर कर जिनमें कंकरियों मारने का भी फरीजा रहेगा, मक्का मुअज्जमा आ जाएंगे।

प्रीयतम की नगरी में

अब हमारे हिन्दुस्तानी हाजी को (यदि वह हज से पूर्व मदीना मुनव्वरा हाजिर नहीं हुआ है) मदीना मुनव्वरा जाने की लौ लगी है कि अपने उस पैगम्बर को सलाम भी कर आयें जिसकी बदौलत ईमान, नमाज और स्वयं इस हज की दौलत प्राप्त हुई। उसकी मस्जिद में नमाज भी पढ़ आएं, जहां एक रकअत का सवाब पचास हजार रकअत के बराबर है। उसके प्रिय नगर की गलियां, उसके और उसके साथियों के त्याग, उत्सर्ग एवं बलिदान के मैदान भी देख आयें जिसके पग पग पर बल्कि कण कण पर इस्लाम का इतिहास अंकित है।

हज भी हो गया, जियारत भी हो गई, हाजी प्रसन्नचित होकर अपने देश वापस हुआ। मित्रों तथा सम्बन्धियों ने फिर आगे बढ़कर उसका स्वागत किया और अपनी अपनी समझ, ज्ञान एवं क्षमतानुसार अपनी श्रद्धा व्यक्त की और उसकी दुआएं लीं।

हाजी की उपाधि का अधिकार

यह हज का संक्षिप्त चित्रण है, इससे इस्लाम के चार अनिवार्य कर्तव्यों अथवा स्तम्भों की पूर्ति होती है। हज से निवृत्त हुए किन्तु नमाज, रोजा (और अगर निसाब वाला है तो) जकात का फरीजा जीवन भर साथ है। ईमान और ईमान से सम्बद्ध क्रियाएं तो जान के साथ हैं और जीवन की अन्तिम सांस तक हैं, अब हज के नैतिक उत्तरदायित्वों और हाजी की उपाधि का पात्र बनने के उत्तरदायित्व को सिद्ध करने की अभिवृद्धि है।

हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नजर में

मौ० अबुलहसन अली हसनी

हज्ज इस्लाम का चौथा रुक्न

इस्लाम का चौथा रूक्न हज है। यदि कोई व्यक्ति इसकी शर्तें पूरी करने पर भी हज न करे तो उसके लिए कुरआन तथा हदीस में ऐसे शब्द प्रयोग किये गये हैं कि जिनसे भय होता है कि वह इस्लाम के क्षेत्र एवं मुसलमानों की संस्थ्ज्ञा से निष्कासित एवं निर्गत न हो। यह फरीजा एक निश्चित समय तथा एक विशिष्ट स्थान पर अदा होता है अर्थात जिलहिज्जा के मास में जो इस्लामी कलेण्डर का बारहवाँ महीना है। इससे सम्बद्ध विभिन्न क्रियायें ८, जिलहिज्जा से १२ जिलहिज्जा तक पूरी हो जाती है।

हज का फरीजा एक निश्चित समय तथा विशिष्ट स्थान से सम्बद्ध

इस पूरे फरीजे इबादत का सम्बन्ध मक्का मुकर्रमा और उस के पास के स्थानों 'मिना', मुज़्दलिफ़ा एव 'अरफात' से है। हज से सम्बद्ध समस्त क्रियायें वहीं अदा होती है। न जिल्हिज्ज के अतिरिक्त वर्ष के किसी दूसरे महीने में और न इन निर्धारित तिथियों के अतिरिक्त स्वयं इसी मास की किसी अन्य तिथि में और न मक्का मुकर्रमा, मिना, मुज्दलिफ़ा अरफात के अतिरिक्त किसी दूसरे स्थान पर यह फरीजा अदा हो सकता है। जिन घटनाओं, जिन महापुरूषों, जिन युक्तियों एवं हितों तथा जिन उद्देश्यों से इसका सम्बन्ध है उनके प्रति यही उचित है कि इस भव्य, महान एवं अनिवार्य कर्तव्य फरीजा का पालन उसी महीने, उन्हीं तिथियों तथा उन्हीं स्थानों पर किया जाये। यह फरीजा खुदा के दो प्रेमियों एवं प्रिय पैगम्बरों इब्राहीम व इस्माईल (सलामती हो उन पर) के एकेश्वरवादी भाव एवं उल्लास आसक्ति, अनुरक्ति एवं आत्म विस्मृति और त्याग एवं आत्म बलिदान की यादगार और उनके आसक्ति युक्त क्रियाओं का अनुकरण है जो इनसे इन्हीं स्थानों और इन्हीं तिथियों में प्रदर्शित हुई और जिन के अन्दर आसक्ति एंवं अनुरक्ति, आत्मापर्ण एवं आत्म विस्मृति, रीति–रिवाज, रूचियों एवं अभियचियों, विधियों एवं प्रतिधियों और मानव जाति के समस्त स्वरचित स्तरों एवं आदर्शों से क्षण मात्र के लिए स्वतंत्रता, स्वच्छदता एवं निःस्पृहतः की परिस्थितियां उत्पन्न करने की क्षमता है फिर समस्त संसार के मुसलमानों चाहे वह किसी युग अथवा किसी देश के हो। इब्राहीमी सभ्यता, इस्लाम के केन्द्र और खान–ए–खुदा से सदैव सम्बद्ध रखने का जो उद्देश्य है, उसकी पूर्ति भी इसके बिना सम्भव नहीं।

जैसा कि ऊपर उल्लेखित किया गया है, हज का फरीजा मक्का मुअज्जमा और आस पास के विशिष्ट निकटवर्ती स्थानों में अदा होता है। अतः हम हिन्दुस्तानी मुसलमानों के उल्लेख में उसके विस्तृत विवरण का वर्णन नहीं करेंगे। वह एक ऐसी विस्तार युक्त प्रक्रिया है और ऐसा बहुलांगी फरीजा है जिसके साथ सैकड़ों आदेश एवं निर्देश सम्बद्ध है, और जो वहां गये और स्वयं कार्याविन्वत किये बिना सही रूप से समझ में भी नहीं आ सकता। फिर भी हम बहुत संक्षिप्त रूप में एक हिन्दुस्तानी मुसलमान के हज का व्यवहारिक चित्र प्रस्तुत करेंगे।

मक्का मुकर्रमा तथा मदीना मुनव्वरा की यात्रा और मुसलमान का हर्षोल्लास और मनोरथ एवं अभिलाषा

हिन्दुस्तानी मुसलमान अपने हज के प्रति हर्षोल्लास और हरमैन शरीफैन के सम्बन्ध तथा वहां की हाजिरी की तमन्ना और अरमान में प्रसिद्ध है। इस समय भी उनकी संख्या उन समस्त देशों से अधिक होती है जहां मुसलमान अल्पसंख्यक हैं। हिन्दुस्तानी मुसलमान जब अपने शहर या गांव से रवाना होता है तो उसके सगे सम्बन्धी और मित्र एवं साथी उसको अति श्रद्धा एवं प्रेम पूर्वक विदा करते हैं अनेक प्रकार से वह अपनी श्रद्धा एवं आस्था का प्रदर्शन करते हैं और उससे दुआओं के लिए प्रार्थना करते है। विशेषकर यह कि उनको दुआ की स्वीकृति से वक्तों तथा स्थानों पर खुदा के घर तथा उसके महबूब के नगर में विस्मृत न किया जाए।

बन्दरगाह पर हाजिरी की दिनचर्या

यही दशा उस बन्दरगाह की होती है जहां से हाजी प्रस्थान करता

है। हाजी अपनी शिक्षा तथा धार्मिक लगन के अनुसार इस महान एवं प्रतिष्ठित फरीजे के लिए, जिसमें यथेष्ट मात्रा में धन और समय व्यय होता है, तैयारी करता है। वह अगर स्वयं पढ़ा लिखा है तो हज के मसायल की किताबें तथा हज के प्रति भाव एवं अभिरूचि और उन पवित्र स्थानों से लाभ उठाने की क्षमता उत्पन्न करने वाले लेख तथा कविताऐं पढ़ता है, और प्रयास करता है कि वह इस शुभावसर पर अधिक से अधिक लाभ उठाए, मालूम नहीं, फिर उसको वहां की हाजिरी नसीब हो या नहीं। जहाज में भी सामान्यतः इसका प्रबन्ध होता है और भाषणों एंव व्याख्यानों द्वारा इसका मार्ग दर्शन किया जाता है और प्रेम की वह चिंगारी, जिसको लेकर वह जा रहा है, प्रज्वलित हो उठे।

एहराम बांधना तथा प्रेम एवं अनुराग की छटायें

हिन्दुस्तानी हाजी यदि समुद्री जहाज से यात्रा कर रहें हैं, तो उनका जहाज यलम–लम (एक स्थान का नाम है) के सामने से गुजरता है जो दक्षिण की ओर से आने वाले हाजियों की मीक़ात है, तो एक साइरन बजता है, जो इस बात की सूचना है कि हाजियों की मीक़ात आ रही है।

बरहना सर कफ़न बर दोश

हाजी साहबान एहराम की तैयारी करें मानों अब हज के मैदान में हाजियों को क़दम रखना है, वह स्नान करके दो बिना सिली चादरें अपने शरीर पर डाल लेते हैं। एक लुंगी अर्थात् तहबन्द के समान बांध लेते हैं और एक चादर से शरीर को कुर्ते के स्थान पर लपेट लेते हैं, और दो रकअत नमाज़ पढ़कर नंगे सिर होकर हज की नियत (संकल्प) कर लेते हैं, और अब हज के समस्त प्रतिबन्ध उन पर लागू हो गए। अब वे वस्त्र जो सदैव पहनते थे, जिनके लिये वर्जित हैं। चेहरा और सिर ढाकना भी मना है। अब सब बरहना (नग्न) सर कफ़न बर दोश दिखाई पड़ते हैं न अमीर की क़ैद है न गरीब की, न राजा की न रंक की, न ज्ञानी की न अज्ञानी, न गोरे की न काले की न वृद्धा की न युवा की, अलबत्ता महिलाओं के कपड़े नहीं उतरते।

उनका एहराम केवल यह है कि चेहरा न ढके अब हज का तराना (गान) आरम्भ हो गया, प्रत्येक व्यक्ति की ज़बान पर तराना है :–

लब्बैक अलहुम्म लब्बैक,
लब्बैक ला शरीक–लक लब्बैक,

इन्नल्हम्द–वन्निअ़मत लक
वल मुल्क–ला शरीक–लक
हाजिर हूँ खुदाया हाजिर हूँ
हाजिर हूँ, तेरा कोई साझी नहीं हाजिर हूँ

बेशक समस्त गुण तथा एहसान निअ़मतें,

पूरी सलतनत तेरी है, तेरा कोई साझी नहीं।

अब सारा जहाज जो एक छोटे नगर के समान है, इसी राग से गूंज रहा है। हाजियों का सलाम भी यही है। और उनका पयाम (सन्देश) भी यही, एहराम बाँध लेने और हज की नियत (संकल्प) कर लेने के बाद काम युक्त क्रियाएं निषिद्ध रहेंगी। लड़ाई झगड़ा, गाली गलौज और निर्लज्जता की बातें तो पहले भी अप्रिय थीं, अब और भी अप्रिय एवं घृणाजनक और हज के विरूद्ध हैं। कुरआन शरीफ में आता है–

(जिसने हज तय कर लिया तो फिर) "हज में न कोई अश्लील बात होने पाय न कोई दुष्कर्म और न कोई झगड़ा।" मंजिल जितनी निकट आती है, शौक उतना ही बढ़ता जा रहा है। बरसों के अरमान निकलने का समय आया है। खुशी क्यों न हो, जिस घर की ओर मुंह करके जीवन भर नमाज पढ़ते रहे, जीवित रहे तोउसी का दम भरते रहे, कोसों दूर और समुद्र पार भी मानवी आवश्यकताओं हेतु (शौच आदि) उसकी ओर मुख अथवा पीठ भी नहीं की, उसकी ओर पैर फैलाना भी सहन न था, मृत्यु पश्चात भी उसी की ओर मुख करके अन्तिम निन्द्रा सोना है, अब वह निकट आ रहा है। (अब पानी के जहाज से हज्ज का सफर खत्म हो चुका है अब हवाई जहाज से सफर होता है।)

काबे पर एक नजर और दिल पर अजब असर

अल्लाह अल्लाह करके हरम की सीमा में कदम रखा और देखते देखते द्रुतगामी मोटरों ने खुदा के घर (काबा शरीफ) के सामने जाकर खड़ा कर दिया। हिन्दुस्तानी हाजी की दृष्टि प्रथम बार जब उस चौकोर घर पर पड़ती है, जो काला वस्त्र धारण किये हुए हैं और जिसमें वाहय रूप से निर्माण कला की चातुर्यता एवं चित्रकारी की नूतनता लेश मात्र नहीं, तो आंसुओं की झड़ियां लग जाती हैं, कभी हिचकियों सेरोना आरम्भ कर देता है, और कोई असीम प्रसन्नता एवं आनन्द प्राप्त कर हंसने लगता है और उस पर उन्माद की दशा आच्छादित हो जाती है। अब इसी घर

का तवाफ (परिक्रमा) करना है, कहीं से उसकी ओर मुख करके नमाज पढ़ना है, इसी के पास कुछ पगों की दूरी पर 'सफा' एवं 'मरवा' नामक दो पहाड़ियों के चिन्ह हैं जिनके बीच खुदा की नेक बन्दी एक पैगम्बर (इब्राहीम अलैहिस्सलाम) की धर्मपत्नी गोद के बेटे पैगम्बर (इस्माईल अलैहिस्सलाम)के लिए पानी की खोज में दीवानों के समान दौड़ी थीं, कहीं तीव्र गति से चलती कहीं मन्द गति से। खुदा को यह अदा ऐसी पसन्द आयी कि वह अब सभी को उसका अनुकरण करने का आदेश है। हाजी बैतुल्लाह (खुदा का घर) के सात चक्कर करके तवाफ करेंगे और यहां दोनों पहाड़ियों के बीच सात फेरे करेंगे और यह दोनों कार्य हज की क्रियाओं में से हैं।

अरफात के मैदान में

अब जिलहिज्जा की आठवीं तारीख आई । आज सब हाजी दिन निकले एहराम की हालत में मक्का मुकर्रमा से मिना प्रस्थान कर जायेंगे जो यहां से चार मील की दूरी पर है। दिन भर वहां रह कर अगले दिन नवीं जिलहिज्जा को अरफात के मैदान में पहुंच जायेंगे। आज हज के निचौड़ का दिन है और हज का सबसे महत्वपूर्ण फरीजा यहीं अदा करना है। काम क्या है, बस दिन भर दुआ और खुदाकी याद करना, लब्बैक की सदा लगाना, जीवन भर किये गये गुनाहों की क्षमा याचना करना, भविष्य के लिए आज्ञा पालन तथा आदेश पालन पवित्र एवं पुणायातमक जीवन व्यतीत करने का दृढ़ संकल्प करना।

अरफात की एक विशिष्ट दुआ

यहां पर अरफात की एक दुआ जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम द्वारा की गई थी, उसका अनुवाद प्रस्तुत किया जाता है, जिससे उस बन्दिगी एवं दरमांदगी (विवशता) अर्थात् भक्ति, विनय तथा विनम्रता का किसी हद तक प्रदर्शन होता है जो यहां वांछित है और जिसे इस दुआ में अभिव्यक्ति किया गया है।

ऐ अल्लाह ! तू मेरी बात को सुनता और मेरी जगह को देखता हे और मेरे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष से (भली भांति) अवगत है। तुझसे मेरी कोई बात छिपी नहीं रह सकती। दुखी हूं, मुहताज हूं, हताश हूं, भयभीत हूं, अपने अपराधों को स्वीकार करने वाला हूं, मानने वाला हूं, तुझ से भीख मांगता हूं जैसे असहाय भीख मांगते हैं। तेरे आगे गिड़गिड़ाता हूं जैसे अपराधी, गिरा पड़ा एवं तिरस्कृत गिड़गिड़ाता है और तुझसे मांगता है जैसे डरा हुआ पीड़ित मांगता है और जैसे वह व्यक्ति मांगता है जिसकी गर्दन तेरे सामने झुकी हुई हो और उसके आंसू बह रहे हों और तन बदन से वह तेरे समक्ष नत मस्तक हो और अपनी नाक तेरे सामने रगड़ रहा हो। ऐ अल्लाह! तू मुझे अपने से दुआ मांगने में असफल न रख और मेरे प्रति अति कृपाशील एवं दयावान हो जा, ऐ वह जो उनसब में उत्तम है जिन से सवाल किया जाता है और ऐ वह जो प्रदान करने वालों में सर्वत्र उत्तम है।

खैमों (तम्बू) के एक नगर में ईश्वर प्रेमियों तथा सत्यानुरागियों का जमघट

अरफात में अजीब आलम है। ऐसा प्रतीत होता है कि समस्त संसार से अलग थलग कोई विचित्र स्थान है। डेरों का नगर, न भवन न छायादार वृक्ष, दुआ और आहबुका (प्रार्थना करना तथा गिड़गिड़ाना) का एक कुहराम मचा है, इसका यह अर्थ नहीं कि खान–पान उपलब्ध न हो और सब रोजे से हों। खाना पीना भी है और मिलना मिलाना भी, मगर सब को धुन कुछ और ही की लगी है। यहां जुह्र अस्र की नमाज हुई, मगरिब की नमाज जीवन भर अपने समय (तुरन्त सूर्यास्त पश्चात्) पर पढ़ी थी किन्तु आज उसको समय से बे समय (इशा के समय) मुजदल्फा जा कर पढ़ना है, ताकि ज्ञात हो कि न हम आदत के गुलाम हैं न इबादत के खुदा के हुक्म के बन्दे हैं, और जब और जहां पढ़वायें, वहीं पढ़ेंगे, उसी की नमाज उसी के गुलाम।

अरफात से मुज्दलिफा, मुजदल्फा से मिना और मिना में दो दिन निवास

सूर्य अस्त हुआ, तोप चली, खेमे उखड़े, इन्सानों का नगर यहां से उजड़ कर मुजदलिफ़ा में बसेगा जो यहां से लगभग छः मील की दूरी पर है। देखते देखते रात ही रात अरफात के मैदान में सन्नाटा और मुजदलिफ़ा में मनुष्यों का ठाठें मारता समुद्र। रात्रि मुजदलिफ़ा में गुजारी, फज्र के समय नमाज पढ़ी और मशअरिल हराम पर दुआ की उसी मैदान से कंकरियां चुनीं ताकि मिना में शैतान के मुंह पर मारी जाएं और रमी का फरीजा अदा हो, तथा मिना की ओर चल दिये। अब फिर मिना, आदि यहां आना ही था, तो हज का सत एवं सार है। अब मिना में तीन दिन या दो दिन निवास करना है। आज कुर्बानी भी करनी है, कंकरियां भी मारना है, बाल मुंडवाने हैं और मक्का मुकर्रमा

(शेष पृष्ठ ८ पर)

शिक्षा का अर्थ

मौ० अब्दुल माजिद दरयाबादी

आपके पड़ोस में एक कमर झुकी हुई बुढ़िया रहती है जिनका वारिस नहीं। आप कभी अगर उनके आगे दो चार पैसे फेंक देते हैं तो गोया अपने नजदीक हातिम ताई की सख़ावत को मात कर देते हैं, लेकिन कभी सारी उम्र में यह भी तौफ़ीक़ आपको होती है कि उनका कोई काम अपने हाथ से कर दें? आप की माँ अब बूढ़ी हो चली हैं न ताकत बाकी है न होश व हवास पूरी तरह बाकी है, आप अपनी सारी फजूल खर्चियों के मुकाबले में कोई हकीर रकम उन्हें भी देते हैं और इस तरह गोया उनके सारे एहसानात से बढ़कर उनके साथ जो सुलूक कर चुकते हैं या इस से भी आगे बढ़े तो उनकी बीमारी के समय किसी डाक्टर या हकीम को बुलाकर उन्हें दिखा दिया और इस तरह गोया सारे फराइजे फ़रज़न्दी से और औलाद के दायित्व से छुट्टी ले ली, लेकिन कितीन बार आप ने उन का काम अपने हाथ से किया है? कितनी बार उन्हें आपने दौड़कर पानी पिलाया है कितनी बार उनकी जूतियां साफ कर के उन्हें दी है? कितनी बार उनके लिए तश्त और उगालदान साफ करके उनके सामने रखा है? आप रास्ते में जाते होते हैं, एक बूढ़े मजदूर को आप देखते हैं कि उसने बोझ सर से उतार कर रख दिया है, वह इतना भारी है कि बिना किसी के सहारे के नहीं उठ सकता, वह बेकस चारों तरफ निगाह दौड़ाता है। आप उसकी बेकसी को अच्छी तरह महसूस करते हैं लेकिन गुजरते हुए चले जाते है इसलिए कि मजदूर के बोझ में सहारा देना आप के नजदीक आप की शान, आप के मर्तबे आप की इज़्ज़त, आप की शराफ़त, आप की शिक्षा के विपरीत है।

दूसरों की ख़िदमत को जाने दीजिये, स्वयं अपने काम काज अपनी जरूरतों को लीजिये। आप अपने काम अपने हाथ से करते थे। कर सकते हैं? अपनी कितनी जरूरतों को बिना दूसरों के मुहताज हुए आप स्वयं पूरा करते रहते हैं? स्टेशन पर अपना सामान आप नहीं उठा सकते, बाजार में अपना खरीदा हुआ सौदा अपने हाथ में लेकर नहीं चल सकते, अपना खाना आप नहीं पका सकते, अपना कपड़ा आप नहीं सी सकते, अपने कपड़े आप नहीं धो सकते, ज्यादा पैदल आप नहीं चल सकते कि इन में से हर काम करने में आप को अपनी तौहीन नज़र आ रही है।

आप के लिए आप ही के यह सारे काम आप के बूढ़े नौकर करें, बूढ़े मजदूर करें, बीमार खिदमतगार करें, लागर कुली करें, न करें तो एक आप ही न करें। और आप सिर्फ इस लिए न करें कि आप "शरीफ" हैं और आप "शिक्षित" हैं। आप सवारी के किराये में, मजदूरों की मजदूरी में, कुलियों के भाड़े में एक तरफ दिल खोलकर खर्च भी करते रहें, और दूसरी तरफ जबान पर यह फरियाद भी जारी है कि आमदनी काफी नहीं होती, खर्च पूरा नहीं पड़ता, कर्ज लदता जाता है।

क्या शिक्षा का यही अर्थ है कि वह जीवन को इतना खर्चीला बना दे? क्या शिक्षा का यही सार है कि इन्सान इन तमाम अनावश्यक औपचारिकताओं (तकल्लुफात) का गुलाम बन जाए? क्या शिक्षा का यही उद्देश्य है कि इन्सान की जिन्दगी पूरी तरह बनावटी होकर क्या शिक्षित व्यक्ति की यही पहचान है कि वह अपने बड़ों की खिदमत और छोटों की दस्तगीरी (सहारा) करने में अपनी हतक समझे? क्या शिक्षा इसीलिए दी जाती है कि बेकसो और अपाहिजों की मदद करने में शर्म आने लगे? क्या शिक्षा इसका नाम है कि मनुष्य दूसरों का भार उठाने की जगह अपना भार दूसरों पर डाल दे? क्या यही शिक्षा दिलों में हमदर्दी और खुदातरसी, परहित और राष्ट्रीयता की भावना पैदा कर सकती है? क्या इस शिक्षा से आशा है कि वह दिखावा की जिन्दगी को मिटा कर निष्ठा और सच्चाई का पाठ पढ़ायेगी? क्या यही वह "शिक्षा" है जो मनुष्य को देवता के मर्तबः तक न पहुंचा सके तो भी कम से कम मानवता की प्रतिष्ठा पर काइम रहने देगी? आध्यात्मिक और नैतिक हैसियतों को छोड़िये, शुद्ध ध ार्मिक व नैतिक पहलुओं से भी सोचिये और मनन कीजिये कि यह शिक्षा जिस के यह खुले हुए नतीजे हों मुल्क और कौम के हक़ में रहमत (वरदान) व बरकत है या भार और वबाल?

(तामीरे हयात लखनऊ २५ अक्टूबर १९८४ से सामार)

प्रस्तुतिः मो० हसन अन्सारी

●●●

महान विचारक अली मियां

के

अन्तिम सम्बोधन का एक अंश

''सज्जनों !''

हम मुसलमानों ने पूरे संकल्प के साथ सोच समझकर अपने वतन भारत मे रहने का फैसला किया है, हमारे इस फैसले को अल्लाह के इरादा के सिवा कोई ताकत बदल नहीं सकती। हमारा यह फैसला किसी कम हिम्मती, मजबूरी या बेचारगी पर आधारित नहीं, हमने सोच समझकर फैसला किया है।

हमारा दूसरा फैसला यह है कि हम यहां अपनी पूरी आस्था, धार्मिक पहचान, शरीअत के कानून और अपनी पूरी मजहबी व सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ रहेंगे। हम इनके किसी एक बिन्दु को छोड़ने के लिए तैयार नहीं।

इस देश के वासी की हैसियत से हमें यहां आज़ादी और इज़्ज़त के साथ रहने का पूरा हक़ हासिल है, यह इस देश के लोकतंत्र और संविधान का भी फ़ैसला है। लेकिन इसका यह मतलब कदापि नहीं कि हम अपनी विशेषताओं, शरीअत के कानून, धर्म के आदेशों अपनी आस्था व पहचान, अपनी भाषा व सभ्यता और अपनी उन चीजों को छोड़कर जो हमको प्रिय हैं, इस देश में रहें। इस तरह रहने से यह वतन वतन नहीं बल्कि एक जेलखाना और पिंजड़ा बन जाता है जिसमें मानो पूरी कौम को जीवन की मान मर्यादा और लज़्ज़तों से वंचित रख कर सज़ा दी जाती है, और मुसलमान जिस देश में रहेगा, उसकी राष्ट्रीयता चाहे कुछ हो उसकी तहजीब इब्राहीमी होगी। हम यहां जिन्दा और ससम्मान इनसनों की तरह रहना चाहते हैं। हम इस देश में आजाद हैं, इसके विकास और संविधान-रचना में शामिल हैं। इसलिए इसका कोई प्रश्न नहीं कि हम दूसरे दर्जे के शहरियों की तरह जिन्दगी बसर करें। अपने देश में आजादी के साथ ज़िन्दगी गुजारना हर व्यक्ति का नैसर्गिक, मानवीय, नैतिक और कानूनी हक़ है और इस हक़ (अधिकार) को जब भी छीनने की कोशिश की गई तो इसके हमेशा संगीन परिणाम निकले।''

किस्त पांच

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अख़लाक़

अल्लामा शिबली नोमानी

मेहमाननवीजी (आतिथ्य)

अरब में चारों तरफ और सूबों से बड़ी संख्या में लोग नबी सल्ल० की बारगाह में आते थे। रमला रज़ि० एक सहाबिया थीं उनका घर दारूल ज़यूफ था। यहीं मेहमान लोग उतरते थे। उम्मे शरीक रज़ि० जो एक दौलतमन्द और उदार अन्सारियः थीं उनका घर भी गोया एक मेहमान खाना था। खास लोग मस्जिदे नबवी सल्ल० में उतारे जाते थे, अतः खलीफ का शिष्ट मण्डल (वफद) यहीं उतरा था। हजरत मुहम्मद सल्ल० स्वयं इन मेहमानों की खातिरदायी और सत्कार फरमाते थे। यूं भी जो लोग हाजिर होते थे, बिना कुछ खाये पिये वापस न आते थे। (जरकानी, मुस्लिम, तिरमिजी)

उदारता में काफिर व मुसलमान का भेद–भाव न था। मुश्रिक व काफिर सब आपके मेहमान होते हैं और आप एक समान उनकी मेहमान नवाज़ी करते। जब हब्शः वालों का शिष्टमण्डल आया तो आपने स्वयं अपने यहां उनको मेहमान उतारा, और स्वयं उनकी सेवा की। एक दफ़ा क़ाफ़िर मेहमान हुआ, आप ने एक बकरी का दूध उसे पिलाया, वह सारे का सारा पी गया। आपने दूसरी बकरी मंगवाई। वह भी काफी न हुई। मतलब सात बकरियों तक नौबत आई जब तक वह सैर न हुआ आप पिलाते गये। कभी ऐसा होता कि मेहामान आ जाते और घर में जो कुछ मौजूद होता वह उनको दे देते और तमाम घर वाले फाकः करते। आप रातों को उठ उठ कर अपने मेहमानों की ख़बरगीरी करते थे। (मुस्लिम, मसनद, अबूदाऊद)।

सहाबः में सबसे गरीब और नादार वर्ग सुफ़्फ़ः के असहाब का था, वह मुसलमानों के मेहमाने आम थे। लेकिन उनको ज्यादा तर स्वयं आप सल्ल० का मेहमान होने का सौभाग्य प्राप्त होता। एक बार आपने फ़रमाया कि जिस के यहां दो आदमी का खाना हो वह उन में से पांच आदमी को साथ ले जाये। अतएव हज़रत अबू बक्र रज़ि० तीन आदमियों को साथ लायें, लेकिन आप सल्ल० दस आदमियों को साथ ले गये।

असहाबे सुफफः में हजरत अबू हुरैरः रज़ि० अपनी गरीबी का हाल बड़े दर्द भरे तरीकः से बयान करते हैं। वह फरमाते हैं कि मैं एक दिन अत्यन्त भूख की हालत में आम रास्ते पर बैठ गया। हज़रत अबू बक्र रज़ि० रास्ते से गुजरे तो मैं ने उनसे अपनी जरूरत बताने के लिए कुर्आन की एक आयत पूछी, लेकिन वह गुजर गये और मेरी हालत पर ध्यान न दिया। हजरत उमर रज़ि० के साथ भी यही घटना घटी, और वही नतीजा हुआ। इसके बाद आप सल्ल० का गुजर हुआ तो आप मुझ को देखकर मुस्कराये और फरमाया कि मेरे साथ–साथ आओ। आप घर में पहुंचे तो दूध का एक प्याला नजर आया। आपने मालूम फरमाया तो पता चला कि किसी ने सौगात भेजा है। आपने मुझ से कहा कि असहाबे सुफफः को बुला लाओ । मैं उनको बुला लाया, तो आपने मुझ को दूध का प्याला दिया कि सब को बांट दो।

आप सल्ल० के घर में एक प्याला इतना भारी था कि उसको चार आदमी उठा सके थे। जब दोपहर होती तो वह प्याला आता, और असहाबे सुफ्फः उसके चारों तरफ बैठ जाते। यहां तक कि जब ज्यादा मजमा हो जाता तो आप सल्ल० को उकड़ूं बैठना पड़ता कि लोगों के लिएं जगह निकल आये। (अबू दाऊद)

मिक़दाद रज़ि० का बयान है कि मैं और मेरे दो साथी इस कद्र तंगदस्त थे कि भूख से बीनाई (रौशनी) जाती रही, हम लोगों ने अपने गुजारे की दरख्वास्त की, लेकिन किसी ने मंजूर नही किया। आखिर हम लोग आप सल्ल० की खिदमत में हाजिर हुए. आप दौलत खाने पर लेवा गये और तीन बकरियों को दिखाकर फरमाया कि इन का दूध पिया करो। अतएव हम में हर एक दूध दुह कर अपना अपना हिस्सा पी लिया करता था। (मुस्लिम)

एक दिन आप सल्ल० असहाबे सुफ़्फ़ः को लेकर हजरत आयशा रज़ि० के घर पहुंचे, और फरमाया खाने को जो कुछ हो लाओ। चूनी का पका हुआ खाना सामने लाकर रखा गया। आपने खाने की कोई और चीज तलब की तो छुहारे का हरीरा पेश हुआ। इसके बाद बड़े प्याले में दूध हाजिर किया गया और यही सामान मेहमानों की आखिरी किस्त थी। (अबू दाऊद)।

गदागरी और सवाल की नफरत

बावजूद इसके के आप सल्ल०

की मेहरबानी हर समय आम थी तथापि किसी का बेजरूरत मांगने के पीछे पड़ जाना आप को अप्रिय था। इरशाद फरमाते कि अगर कोई व्यक्ति लकड़ी का गठ पीठ पर लाद लाये और बेचकर अपनी आबरू बचाये तो उस से बेहतर है कि लोगों से सवाल करे, मांगे। (बुखारी)

एक दफ़ा एक अंसारी आये और कुछ सवाल किया। आप ने फरमाया तुम्हारे पास कुछ नहीं है, बोले कि बस एक बिछौना है, जिसका कुछ हिस्सा ओढ़ लेता हूं और कुछ हिस्सा बिछा लेता हू और एक पानी का प्याला है। आपने दोनों चीजें मगंवाई। फिर फरमाया,यह चीजें कौन खरीदता है। एक व्यक्ति ने दो दिरहम लगाये। आपने फरमाया इस से बढ़कर भी कोई दाम लगाता है? एक साहब ने एक को दो कर दिये। आपने दोनों चीजें दे दीं, और दिरहम अंसारी को दिये कि एक दिरहम का खाना खरीद कर घर में दे आओ, और दूसरे से रस्सी खरीदो और जंगल से लकड़ियां लाकर शहर में बेचो। पन्द्रह दिन के बाद वह आप सल्ल० की खिदमत में आये तो दस दिरहम उनके पास जमा हो गये थे। उस से कुछ कपड़ा खरीदा, कुछ का गल्ला मोल लिया। आप सल्ल० ने फरमाया यह अच्छा है या कि कियामत में चेहरा पर गदाई का दाग लगाकर जाते। (बुखारी)

एक दफ़ा कुछ अन्सारी आये और सवाल किया। आपने इनायत फरमाया, फिर जब तक कुछ रहा आपने उनकी दरख्वास्त रद्द नहीं की। जब कुछ नहीं रहा तो आपने फरमाया, मेरे पास जब तक कुछ रहेगा मैं तुमसे बचाकर नहीं रखूंगा। लेकिन जो आदमी अल्लाह से यह दुआ मांगे कि वह उसको सवाल और गदागरी से बचाये तो वह उसकी बचा देता है। और जो खुदासे तवंगरी और दौलत का तालिब (प्रार्थी) होता है वह उस को दौलत देता है और जो सब्र करता है अल्लहा उसको साबिर बना देता है और सब्र से कोई बेहतर और बड़ी दौलत किसी को नहीं दी गयी है। (किताबुस्सदकात)

हकीम बिन हिजाम फतेह मक्का में इस्लाम लाये थे। एक दफा उन्होंने आपसे कुछ तलब किया। आपने इनयात फरमाया। कुछ दिन के बाद फिर मांगा, आपने फिर उनको दिया। तीसरी दफा फिर सवाल किया, फिर कुछ दिया। इसके बाद फरमाया, ऐ हकीम ! यह दौलत हरी और मीठी है जो सन्तोष के साथ इसको कुबूल करता है उसको बरकत मिलती है और जो हिर्स व लालच के साथ इसको हासिल करता है वह इस से वँचित रहता । और इसकी मिसाल उस व्यक्ति की सी है जो खाता है और सैर नहीं होता। ऊपर का हाथ नीचे के हाथ से बेहतर है। हकीम पर आप सल्ल० की नसीहत का यह असर हुआ कि जब तक वह जिन्दा रहे कभी किसी से मामूली चीज भी नहीं माँगी। (बुख़ारी)।

हज्जतुल विदा में आप सल्ल० सदकः का माल बाँटरहे थे कि दो साहब आकर शामिल हो गये। आपने उनकी तरफ नजर उठाकर देखा तो वह स्वस्थ और हाथ पांव के दुरूस्त मालूम हुए। आप ने फरमाया अगर तुम चाहो तो मैं इसमें से दे सकता हूँ लेकिन दौलतमन्द और तन्दुरुस्त काम करने के लाइक़ लोगों का इसमें कोई हिस्सा नहीं है। (बुखारी)।

क़बीसा नाम के एक साहब थे वह क़र्जदार हो गये थे। आपके पास आये तो अपनी ज़रुरत बताई। आपने वादा किया इसके बाद इरशाद फ़रमाया, ऐ कबीसः ! सवाल करना और लोगों के सामने हाथ फैलाना सिर्फ तीन व्यक्तियों को उचित है--एक उसे जो क़र्ज़ से दबा हो, वह माँग सकता है। लेकिन जब उसकी ज़रुरत पूरी हो जाये तो उसको रुक जाना चाहिए। दूसरे उस व्यक्ति के लिए जिसपर अचानक कोई मुसीबत आ गई हो जिसने उसके तमाम माल व पूँजी को बरबाद किया। इसको उस समय तक माँगना जायज़ है जब तक उसकी हालत किसी क़द्र दुरुस्त न हो, जाये। तीसरे उस व्यक्ति को जो फ़ाक़ा कर रहा हो, भूख से पीड़ित हो। और मुहल्ले के तीन आदमी गवाही दें कि हाँ इसको फ़ाक़ा है। इसके अलावा जो कोई कुछ माँग कर हासिल करता है वह हराम खाता है।(अबूदाऊद)

सदकः से परहेज़

आप सल्ल० अपने और अपने ख़ानदान के लिए सदकः व ज़कात लेने को शर्म समझते थे। फ़रमाया करते थे कि मैं घर में आता हूँ ,तो कभी कभी अपने बिस्तर पर खजूर पाता हूँ ,जी में आता है कि उठाकर मुँह में डाल लूँ फिर ख्याल होता है कि कहीं सदक़ः की खजूर न हो इसलिए डाल देता हूँ एक दफ़ा रास्ते में एक खजूर हाथ आ गई। फ़रमाया अगर सदक का शुबह न होता तो मैं उस को ख जाता। एक बार इमाम हसन अ० ने सदकः की खजूरों में से एक खजूर मुँह में डाल ली आपने डाँटकर कहा क्या तुम्हें यह ख़बर नहीं कि हमारा ख़ानदान सदकः नहीं खाता। फिर मुँह से उगलवा दिया।

आपके सामने जब कोई व्यक्ति कोई चीज़ लेकर आता तो आप पूछते

कि सौग़ात है या सदक़ः ? अगर सौग़ात होती तो क़ुबूल फ़रमाते और अगर यह कहता कि सदक़ः तो आप हाथ रोक लेते और दूसरे साहबों को इनायत फ़रमा देते।

सौग़ात और तोहफ़े क़ुबूल करना

दोस्तों के सौग़ात और तोहफ़े आप क़ुबूल फरमाते थे। बल्कि आप ने इसको प्रेम बढ़ाने का बेहतरीन ज़रिया फ़रमाया है। फ़रमायाः—आपस में एक दूसरे को सौग़ात (हदिया) भेजो तो आपस में मुहब्बत होगी।

इसीलिए सहाबा सामान्यतः कुछ न कुछ रोज आपके घर भेजा करते थे और खास कर उस दिन भेजते थे जिस दिन आप आयशा रजि० के हुज्रे में कियाम फरमाते थे। ऊपर गुजर चुका है कि कोई चीज आपको पेश की जाती तो आप दरयाफ़्त फरमाते थे कि यह सदकः है या सौगात? अगर सौगात होती तो स्वीकार करते वरनाः परहेज करते एक दफा एक औरत ने एक चादर भेंट की, आप ने ले ली, उसी समय एक साहब ने मांग ली, आप ने उनको दे दी।

आस पास के राजा महाराजा भी आप को तोहफे भेजा करते थे। सीरिया की सीमा के एक रईस ने एक सफेद खच्चर तोहफा दिया था, मिस्र के अजीज ने एक खच्चर मिस्र से भेजा था। एक अमीर ने आपको मोजे भेजे थे। एक बार रोम के सम्राट ने आप की सेवा में एक पोस्तीन (खाल का कुर्ता) भेजी जिसमें रेशम का अस्तर लगा था। आप ने जरा देर के लिए पहन ली। फिर उतार कर हजरत जाफर रजि० (हजरत अली के भाई) के पास भेज दी। वह पहन कर खिदमते अकदस में आये। आप ने इरशाद फरमाया कि मैंने इसलिए नहीं भेजी कि तुम खुद पहनो। अर्ज की, फिर क्या करूँ? इरशाद फरमाया अपने भाई नजाशी को भेज दो। हजरत जाफर एक मुद्दत अर्थात फतेह खैबर तक हबश में रहे थे। और नजाशी ने उन्हीं से इस्लाम की तालीम पायी थी।

सौगात और तोहफ़े देना

जिन लोगों की सौगात और भेंट स्वीकार करते थे उनको उनका बदला भी अवश्य प्रदान करते थे। हजरत आयशा कहती हैंः—

आप सल्ल० सौगात स्वीकार करते थे और उसका मुआवजः देते थे।

यमन का मशहूर बादशाह जीयजन जिसमें हब्शी हुकूमत मिटाकर ईरान के अधीन अरबी हुकूमत काइम की थी उसने आप सल्ल० को एक कीमती जुब्बः भेजा जिसको उसने तेंतीस ऊंटों के बदले में खरीदा था, आप ने कुबूल फरमाया और फिर उसको एक जुब्बा (हुल्ला) सौगात में भेजा जो बीस से कुछ ज्यादा ऊंट देकर खरीदा गया था।

एक दफा कबीला बनी फजारः के एक व्यक्ति ने आप की सेवा में सौगात के रूप में एक ऊंटनी पेश की, आप ने उसका मूल्य दिया तो वह बहुत नाराज हुआ। आप ने मेंबर पर खड़े होकर सबको सम्बोधित करके कहा कि तुम लोग मुझे सौगात देते हो और मैं अपनी सकत मर इसका सिला (मूल्य) देता हूं तो नाराज होते हो। आइन्दा कुरैश, अन्सार, सकीफ और दौस के सिवा किसी कबीलः का हृदयः कुबूल न करूंगा।

हज़रत अय्यूब अन्सारी जिन के मकान में आप सल्ल० छः महीने तक वास किये थे, आप सल्ल० अक्सर उनको बचा हुआ खाना भेजा करते। हमसायों और पड़ोसियों के घरों में तोहफे भेजते थे। असहाबे सफ्फः अक्सर आप के तोहफों से मुशर्रफ हुआ करते थे।

एहसान का गवारा न फ़रमाना

कभी किसी का एहसान (कृतज्ञता) गवारा न फ़रमाते। हजरत अबू बक्र रजि० से बढ़कर जांनिसार कौन हो सकता था, फिर भी हिज्रत के समय जब उन्हों ने सवारी के लिए ऊंटनी पेश किया तो आपने कीमत अदा की। मदीना में मस्जिद के लिए जो जमीन दरकार थी ज़मीन के मालिकान ने मुफ्त नजर करना चाही, लेकिन आप ने कीमत देकर ली। एक दफा अब्दुल्ला बिन उमर और हजरत उमर दोनों हम सफ़र थे। अब्दुल्ला बिन उमर की सवारी का ऊंट सरकश था और आप सल्ल० की ऊंटनी से आगे निकल निकल जाता था, अब्दुल्ल बिन उमर रोकते थे लेकिन वह काबू न आता था। हजरत उमर रजि० बार बार अब्दुल्ला बिन उमर को डांटते थे। आप सल्ल० ने हजरत उमर से कहा, यह ऊंट मेरे हाथ बेच डालो उन्होंने कहा नज़्र है। आपने फरमाया नहीं, दाम लो। उन्होंने दोबारा अर्ज किया कि यूं ही हाजिर है। आप ने इन्कार किया। आखिरकार हजरत उमर ने दाम लेने मंजूर किये। आपने खरीदकर अब्दुल्ला बिन उमर को दे दिया। कि अब यह तुम्हारा है। (जारी)

प्रस्तुतिः मो० हसन अंसारी

अपने भाई की मदद करो, अपने भाई की मदद करना एक इबादत है।

सातवीं किस्त

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

हज़रत उमर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

ईरान

हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने देहांत के समय उमर (रज़ि०) को अपना जानशीन (उत्तराधिकारी) नियुक्त कर दिया था। देहान्त के बाद क़ानूनी तौर पर बैअत (शपथग्रहण) हो गई और हजरत उमर रजिअल्लाह ने काम शुरू कर दिया।

अरब की दशा तो हजरत अबू बक्र (रज़ि०) के जमाने से ठीक हो गई थी, लेकिन ईरान और शाम का मामला अभी तक प्रारम्भिक दशा में था। पहले बताया जा चुका है कि हजरत अबू बक्र (राज) के हुक्म से हजरत खालिद (रज़ि०) शाम रवाना हो चुके थे और उनकी जगह हजरत मुसन्ना (रज़ि०) लशकर के सरदार मुकर्रर हुए थे। उसी बीच इरानियों ने अपनी दशा ठीक कर ली और हरमुज की मातहती में दस हजार फौज भेजी मुसन्ना (रज़ि०) भी अपनी फौज लेकर आगे बढ़े। बाबुल के स्थन पर दोनों का मुकाबला हुआ। ईरानी बड़ी बहादुरी से लड़े लेकिन आखिरकार हार गए और मैदान से बुरी तरह भागे।

इरानियों को इस हार से बहुत दुख हुआ। अबकी उन्होंने अपने आप को और मजबूत किया ओर जोर शोर से मुकाबले की तैयारी शुरू की। मुसन्ना (रज़ि०) ने यह दशा देखी तो सीधे मदीना पहुंचे और हालात बयान किये। उस समय हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) का आखिरी वक्त था। हालात सुनकर हजरत उमर (रज़ि०) को वसीयत की कि उस तरफ पूरा ध्यान दें। चुनानचा हजरत उमर (रज़ि०) ने खलीफा होते ही हजरत अबू उबैदा सक़फ़ी (रज़ि०) को एक बड़ा लशकर देकर रवाना किया।

ईरानियों से कई मारके हुए लेकिन हर बार मैदान मुसलमानों के ही हाथ रहा। ईरानी सेनापति (सिपहसालार) रुस्तम को यह हालत मालूम हुई तो क्रोध से कांप उठा और तुरंत बहमन जादूया को तीस हजार फौज देकर रवाना किया। फरात नदी के किनारे दोनों फौज़ों का मुकाबला हुआ। मुसलमान बड़ी बहादुरी से लड़े लेकिन अरबी घोड़ों को कभी हाथी का सामना न हुआ था और ईरानी फौज में हाथियों की पूरी क़तार थी। उनको देखकर घोड़े भड़कने लगे इसलिए मजबूरन अरब सवार घोड़ों से कूद पड़े और तलवार लेकर हाथियों पर टूट पड़े। खुद हज़रत उबैदा रज़ियल्लाह तआला ने बढ़कर एक सफेद निशान के हाथी पर तलवार चलाई। तलवार पड़ते ही हाथी बिलबिला उठा और क्रोध में आकर उनके सीने पर पैर रख दिया जिससे पसलियां चूर–चूर हो गयीं।

लड़ाई बड़े ज़ोर शोर से जारी थी। इरानी जोश में बढ़ते चले आ रहे थे और मुसलमान पीछे हटते जा रहे थे। इतने में एक शख्स ने जाकर पुल तोड़ दिया ताकि मुसलमान भागने का विचार छोड़ दें और जम कर लड़ें लेकिन लड़ाई का रंग ऐसा बिगड़ चुका था कि ठहरना कठिन हो गया। मजबूरन मुसलमान पीछे हटे। यहां पुल पहले ही टूट चुका था। घबराहट में कोई चार हजार आदमी नदी में डूब कर मर गए। मुसन्ना ने यह रंग देखा तो खुद आगे जम कर खड़े हो गए और पीछे के लोगों को तसल्ली दी और कहा कि बेफ़िक्री से पुल बनाएं। जब पुल बन गया तो बाक़ी आदमियों को हिफ़ाज़त से उस पार निकाल ले गए लेकिन इस बीच नौ हज़ार आदमियों में से सिर्फ तीन हज़ार रह गए थे।

हज़रत उमर (रजि०) को यह हाल मालूम हुआ तो उन्होंने हजरत मुसन्ना की मदद के लिए ताबड़तोड़ कई फौजें भेजीं। उधर मुसन्ना ने भी फौज तैयार की। यह सारा लशकर बयूब में इकट्ठा हुआ। ईरानी फौज भी महरान की मातहती में आगे बढ़ी। दोनों फौजों में बड़ी सख़्त जंग हुई। ईरानी बड़े जोश से लड़े लेकिन अब की मुसलमानों से मोरचा न लेसके और अन्ततः पराजित हुए और हजारों आदमी काम आए। खुद सरदार महरान भी मारा गया।

इस खबर से सारे ईरान में हलचल मच गई। मलका आरज़ी तख्तो ताज से उतारी गईं। उसके स्थान पर कमसिन यजद गर्द बादशाह बनाया गया। अब की खुद रूस्तम लाखों सिपाहियों को लेकर मुकाबले के लिए

निकला। हजरत उमर को यह हालात मालूम हुए तो एक बड़ी भारी फौज इकट्ठा की और खुद उसे लेकर चले लेकिन सहाबा (रज़ि०) ने रोका कि यह मसलहत के खिलाफ है। आखिर हजरत सआद बिन अबीवक्कास सरदार मुकर्रर हुए।

कुदसिया में जाकर मुसलमानों ने डेरा डाला। हजरत उमर रजिअल्लाह का हुक्म था कि पहले बादशाहे ईरान से मिल लिया जाए। अगर मामला तय हो जाए तो ठीक वरना फिर मजबूरन लड़ाई शुरू की जाए। चुनानचा कुछ लोग इस गरज से यजदगर्द के दरबार में भेजे गए लेकिन कोई बात तय नहीं हुई और लड़ाई ठन गई। इस बार भी हाथियों का सामना था। अरबी घोड़ों ने यह काली बला काहे को देखी थी। बिदक बिदक कर हटने लगे यह मुसीबत ऐसी सख्त थी कि पैर उखड़ जाते थे। खैर ज्यूं त्यूं किसी न किसी तरह दिन समाप्त हुआ। दूसरे दिन मुसलमानों ने झोल और बुर्के डाल कर ऊंटों की ऐसी शक्ल डरावनी बनाई कि हाथी देख कर भागने लगे और ईरानियों की जान अजाब में आ गई। तीसरे दिन मुसलमानों ने हाथियों को मार मार कर भगा दिया और तलवारें लेकर जुट गए। दिन भर और रात भर लड़ाई होती रही। आखिर दूसरे दिन जुहर के वक्त ईरानी भाग निकले । मुसलमानों ने बढ़कर ईरानी झण्डा छीन लिया। रुस्तम घायल होकर भागा और नहर में कूद पड़ा। चाहता था कि तैर कर निकल जाए लेकिन एक शख्स हलाल बिन उरफा ने पकड़ कर कत्ल कर डाला। इस लड़ाई में तीस हजार ईरानी मारे गए।

हजरत उमर (रज़ि०) को इस लड़ाई की बड़ी चिन्ता थी। जब फतह की खबर मिली तो बेहद खुश हुए। कादसिया की फतह न ईरानियों की कमर तोड़ दी। दो एक छोटी छोटी लड़ाइयों के बाद हजरत सआद (रज़ि०) मुसलमानों की फौज के सरदार ने बढ़कर ईरान की राजधानी मदाईन पर कब्जा कर लिया यजदगर्द पहले ही भाग चुका था जो रह गए थे, उन्होंने मातहती स्वीकार कर ली। नौशेरवां के महल में शुक्राने की नमाज पढ़ी। फिर वहीं जुमा की नमाज हुई।

मदाईन में दौलत की कोई हद न थी। पांचवां हिस्सा जब मदीना शरीफ पहुंचा तो दिर्हम (चान्दी के सिक्के) व दीनार (सोने के सिक्के) के अतिरिक्त हीरे जवाहिरात के ढेर लग गए। मदाईन के बाद जलूला और अहवाज आदि में चन्द लड़ाइयां हुईं। आखिर माआरिका नहाविन्द में जाकर हुआ। डेढ़ लाख ईरानी मैदानमें आए। मुसलमानों की संख्या कुल तीस हजार थी। नोमान बिन मकरन फौज के सरदार थे। ईरानी जी तोड़ कर लड़े और इतना खून बहा कि मैदान में घोड़ों के पैर फिसलने लगे। नोमान घायल होकर घोड़े से गिरे लेकिन गिरते गिरते आदेश दिया कि मुझे संभालने की ज़रूरत नहीं, आगे बढ़कर दुश्मन पर हमला करो। उनके बाद हज़रत हज़ीफा (रज़ि०) ने झण्डा हाथ में लिया। शमा होते होते ईरानी पराजित होकर भाग निकले। मुसलमानों ने हम दान तक पीछा किया और उस पर भी कब्जा कर लिया। फतह के बाद एक सिपाही नोमान (रज़ि०) के पास से गुजरा। देखा तो आखिरी वक्त था, सिर उठाया, उन्होंने आंखें खोल दीं और पूछा क्या हुआ। उसने कहा फ़तह। कहा अल्लाह का शुक्र है। अमीरूल मोमिनीन (हजरत उमर) को जल्द इसकी खबर दीजाए। यह कह कर हमेशा के लिए आंखें बन्द कर लीं।

हज़रत उमर (रज़ि०) को जब इस फ़तह का हाल मालूम हुआ तो बहुत ख़ुश हुए लेकिन हज़रत नोमान (रज़ि०) के गम में बहुत रोए। इस लड़ाई में तीस हज़ार के करीब ईरानी मारे गए। इसके बाद उन का जोर टूट गया और फिर किसी बड़ी लड़ाई की हिम्मत नहीं हुई। यजद गर्द इधर उधर मारा मारा फिर रहा था और मुसलमान फौजें बहुत समय तक उसका पीछा करती रहीं लेकिन उस वक्त हाथ न लगा और हजरत उसमान (रज़ि०) के ज़माने में मारा गया।

शाम

यरमूक की लड़ाई ने रूमियों की ताक़त तोड़ दी। हजरत उमर (रज़ि०) के जमाने में उन की रही सही ताक़त भी ख़ता हो गई और सारा शाम देश मुसलमानों के कब्जे में आ गया।

दमिश्क में बहुत दिन लग गए लेकिन आखिर एक दिन मौका मिल ही गया। वहां के बड़े पादरी के यहां लड़का पैदा हुआ था। उस खुशी में सारा शहर वहां जमा था। हज़रत ख़ालिद (रज़ि०) ने मौका अच्छा समझा। कुछ आदमी लेकर तुरन्त शहर में उतर गए और लड़ाई शुरू कर दी। रूमियों ने जो यह देखा तो तुरन्त हजरत अबू उबैदा (रज़ि०) के पास आकर सुलह

(शेष पेज २० पर)

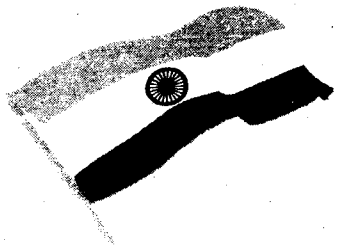

15 अगस्त 2005

मो० हसन अन्सारी

यह शुभ दिन है हम सबका, फहरा लो तिरंगा प्यारा। भारत की आजादी का इतिहास १८५७ से शुरू होता है, यद्यपि अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से निकालने की आवाज सबसे पहले रायबरेली के वीर बांकुरे सैयद अहमद शहीद ने १८२५ में उठाई थी जब उन्होंने ग्वालियर के राजा दौलतराव सिन्धिया के मंत्री हिन्दू राव, जिन के नाम से दिल्ली का एक मुहल्ला आबाद है, को पत्र लिखकर उनका आहवान किया कि आइये हम सब मिलकर सात समन्दर पार से आये इन अंग्रेजों को जो हमारी धरती का शोषण कर रहे हैं, देश के बाहर निकालें।

१८८५, १९०५, १९१९, १९३० और १९४२ आज़ादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण पड़ाव रहे हैं। १५ अगस्त १९४७ को मुल्क आजाद हुआ, ५८ वर्ष हो गए । आजादी की स्वर्ण जयन्ती मनाई जा चुकी, दो साल बाद हीरक जयन्ती मनाई जायेगी। इस समय देश की कुल आबादी के दस प्रतिशत से कम लोग ऐसे हैं जो गुलाम हिन्दुस्तान में जन्मे हैं और यही वह लोग हैं जिन के बारे में कहा जा सकता है कि वह आजादी की असल कीमत को जानते हैं, इसलिए कि उजाले की कद्र व कीमत घोर अन्धकार से निकल कर आने वाला बेहतर जानता है। यह आजादी कितनी कुर्बानियों के बाद हासिल हुई है इस का सही अन्दाजा लगाने के लिए ८०–९० वर्षीय किसी व्यक्ति के पास कुछ समय के लिए बैठना होगा, ऐसा मेरा मानना है।

थाईलैंड एक ऐसा देश है जो कभी गुलाम नहीं रहा। 'थाई' शब्द का अर्थ ही है आजाद। सौ साल पहले अंग्रेजों ने थाईलैण्ड में रेल लाइन बिछाने का ठेका लिया तो वहां की जनता तिलमिला उठी और डट कर इसका विरोध किया। राजा ने कहा हमारे पास इनका हिसाब चुकता करके इन्हे वापस भेजने भर का पैसा नहीं है। जनता ने अपने तन के कपड़े और जेवरात बेचकर राजा के कोष और खजाने को मजबूत किया और कहा इनको आप फौरन चलता करें वरना भारत की तरह यह हमको भी गुलाम बना लेंगे। तत्काल कार्यवाही हुई और अंग्रेज कम्पनीका ठेका समाप्त किया गया और जो श्रमिक इण्डिया से गये थे उन्हे थाईलैण्ड की नागरिकता दी गई। ऐसा ही एंक परिवार बाराबंकी का था जिसके सदस्य बताते हैं कि जब उनके पिता बीसवीं सदी की दूसरी दहाई में थाईलैण्ड गये तो वहां के लोगों की दयनीय दशा देखकर उनसे रहा न गया और वह बोल पड़े कि यहां के लोग बहुत गरीब हैं, तन ढकने को पर्याप्त कपड़ा तक नही है, इनकी दुर्दशा देखी नहीं जाती, इस पर एक औरत बोली, ठीक है, हम गरीब हैं, भूखे हैं, दरिद्र हैं, पर गुलाम नहीं हैं। यह है आजादी की रमक़ और गुलामी की भभक।

१९५१ में शमीम किरहानी ने 'दीप माला' शीर्षक के एक कविता लिखी थी जिसमें वतन के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्होंने कहा था 'लहू का दीपक जला के तुमने अंधेरे घर में किया उजाला,' न जाने कितनी सुगाह रातों ने बेवगी के लिबास पहने, और आशा व्यक्त की थी कि अभी तो आजादी मिले मात्र चार साल हुए हैं, आगे चलकर यह पौधा तनावर वृक्ष होगा, फूलेगा, फलेगा और हमारे हुस्ने सलीका मन्दी से घर में हो जायेगा उजाला।'

गत अट्ठावन वर्ष में भौतिक विकास हुआ है, पैदावार बढ़ी है, सुख–सुविधा के साधन बढ़े हैं, रोटी कपड़ा और मकान की उपलब्धता, आबादी में बढ़ोत्तरी के बावजूद बढ़ी है, आज भारत की गिनती दुनिया के महान देशों और बड़ी ताकतों में की जाने लगी है और इसे अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर श्रद्धा व सम्मान की नजर से देखा जाने लगा है, किनतु यह सब उतना नहीं हो सका जितना होना चाहिए था। यदि मानवीय मूल्यों और सामाजिक मान्यताओं में गिरावट न आई होती, मान–मर्यादा के मूल्यों में बदलाव न आया होता सुख–शान्ति और सन्तोष के मापदण्ड नबदले होते, इन्सान को इन्सान समझने में गलती नकी गयी होती, आधुनिकता की अन्धी तकलीद (अनुसरण) में नयी पीढ़ी फंस कर न रह गयी होती तो स्थिति कुछ और होती।

संविधान के व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता को सुनिश्चित करने के लिए भारत के नागरिकों को

१. सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय २. विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास और आस्था तथा इबादत की आजादी ३. स्टेटस (सोशल पोजीशन) ओर अवसर की बराबरी ४. भाई चारा को आपस में बढ़ावा देने के चार मशाल दिये थे कि इन के उजाले मे आगे बढ़ते चले जाना पर इनकी कद्र करने में, इनके सदुपयोग में कहीं न कहीं हम सै कोताही हुई, इसलिए लक्ष्य की शत प्रतिशत प्राप्ति न हो सकी। दूरियां बढ़ी हैं। नफरत बढ़ी है। भय बढ़ा है। अनैतिकता बढ़ी है। मनमानी बढ़ीहै। हिंसा बढ़ी है। देश को आजाद कराने वालों ने हमारे सामने अवज्ञापालन, असहयोग आन्दोलन, और अहिंसा परमोधर्मः की मिसाल रखी थी और नामुमकिन को मुमकिन कर दिखाया था। हमने प्रेम के बजाय नफरत और अहिंसा के बजाय हिंसा को हवा दी है। उन्होंने अवज्ञापालन, असहयोग आन्दोलन जुल्म व अत्याचार के खिलाफ किया था, हम मां–बाप, गुरूजन और बड़े बूढ़ों का अवज्ञापालन करने और उनके साथ असहयोग करने को अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझने लगे हैं। आज हम आजाद होने के बावजूद फैशन के गुलाम हैं, खाने–पीने के नये नये तरीकों के गुलाम हैं, टी०वी०, वीडियो, सी०डी, मोबाइल फोन के गुलाम हैं, सवारी के गुलाम हैं, नशा के गुलाम हैं। रीति–रिवाज के गुलाम हैं, नाजायज इच्छाओं के गुलाम हैं, नाजायज इच्छाओं और फर्जी जरूरतों के गुलाम हैं। जियो और जीने दो 'पंचशील' की आधार शिला थी, अब जिस की लाठी उस की भैंस की कहावत चरितार्थ होती दिखने लगी है। हम सत्ता में नहीं हैं तो सब कुछ खराब है, सत्ता में हैं तो सब खैरियत है। हमारे मापदण्ड और पैमाने दोहरे हैं, फिर सही माप कैसे हो?

देश की आजादी को अक्षुण बनाने के लिए सबके सुख–चैन की प्राप्ति के लिए हम सब को सोचना होगा और वस्तु–स्थिति में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रयास करना होगा। एक चना भाड़ नहीं फोड़ सकता परन्तु वही एक चना जब भुनता है तो उसकी सुगन्ध दूर तक जाती है उसके सोंधेपन में हमारे लिए और हर समझदार के लिए कीमती सन्देश है, काश हम इसे समझ सकते।

सीखले फूलों से गाफिल मुद्दा–ए–जिन्दगी।

खुद महंकता ही नहीं गुलशन की महकाना भी है।

स्वतंत्रता दिवस का पावन पर्व हम सब के लिए मंगलमय हो, हम सब को मुबारक हो। ईश्वर हमें सुमति प्रदान करे, इस लिए कि:–

'जहां सुमति तहां सम्पत्ति नाना'

Mob: 9415006053

Mohd. Irfan
Proprietor

न्यू करीम ज्वैलर्स

NEW KAREEM JEWELLERS

Shop No. 1 Balai Market, Opp. Ek Menara Masjid, Akbarigate, Lucknow. Ph.: (S) 2260890

(पृष्ठ १८ का शेष)

कर ली यद्यपि उस समय तक आधा शहर फतह हो चुका था मगर चूंकि हजरत अबू उबैदा सुलह कर चुके थे। इसलिए यह भाग भी उस आदेश में शामिल कर दिया गया।

दमिश्क के बाद हमस, कनसरीन और कीसा आदि फतह कर के इस्लामी फौजों ने बैतुलमुकद्दस के सामने डेरे डाल दिए, शहर के लोगों ने कहा कि हम सुलह के लिए तैयार हैं लेकिन हम चाते हैं कि यह मामला खुद खलीफा (हजरत उमर रज़ि०) से तय हो हज़रत उबैदा (रज़ि०) ने हजरत उमर रज़ि० को सारे हालात की सूचना दी। हजरत उमर (रज़ि०) ने मदीना में हजरत अली (रज़ि०) को अपना कायम मुकाम (प्रतिनिधि) बनाया और खुद बैतुलमुकद्दस रवाना हो गए। जाबिया के स्थान पर फौज के सरदारों में मुलाकात हुई और वहीं सुलहनामा लिखा गया। इसके बाद बैतुलमुकद्दस रवाना हुए। उस समय आप बहुत ही फटे पुराने कपड़े पहने हुए थे। लोगों ने चाहा कि आप उन्हें बदल कर अच्छे कपड़े पहन लें लेकिन आप ने इन्कार कर दिया और फरमाया हमारे लिए इस्लाम की इज़्ज़त बहुत है।

बैतुल मुकद्दस के बाद फिर कोई बड़ी लड़ाई नहीं हुई और मुसलमानों ने रूमी राजधानी अनताकिया में जाकर झण्डा गाड़ दिया। कैसरे रूम ने यह हाल देखा तो होश उड़ गए। ज्यूं त्यूं एक जहाज पर बैठ कर कुस्तुनतुनियां की राह ली और सारा मुल्क शाम मुसलमानों के कब्जे में आ गया। (जारी)

अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

गुफ़रान नदवी

आज का नौजवान
और उसकी समाजी व अख़्लाक़ी बुराइयां

फ़िल्मी चसका :

आज के ज़माने का हंगामा खेज़ अख़लाक़ को खराब करने वाला ईमान को बरबाद करने वाला फितना फिलिम है। नौजवान तबके को इसकी बुरी तरह लत पड़ी हुई है, किसी क़सबे या शहर में जाने वालों का अन्दाज़ा लगाएं तो मुसलमान नौजवानों की तादाद आबादी के तनासुब से कहीं जियादा मिलती है, फिलिम देखना एक फैशन बन चुका है दिल बहलाने का एक अनोखा फ़ारमूला है।

आज के ग़ैरतमन्द (आत्म सम्मानित) मुसलमान बड़ी शान व शौकत के साथ औरतों को सनीमा हालों की ज़ीनत बनाते हैं और उसको बीवियों के हुकूक में एक बुनयादी हक़ समझते हैं, हद तो यह है कि फ़िलिम बीनी कमसिन बच्चों में वबा की तरह फैल रही है। समझदार होने से पहले उसके शिकंजे में आ चुके होते हैं मां बाप और घर के ज़िम्मेदार उनकी जेब गर्म करके, इस बुराई में बराबर के शरीक होते हैं।

सिनेमा के बुरे असरात (प्रभाव) अब किसी से पोशीदा नहीं रहे यही फिलमें जराएम सिखाती हैं , इन्सान में बदखुलकी, बदकिरदारी (असभ्यता दुष्कृता) बेहयाई, बेशरमी, मेहनत व अमल से दूरी बेग़ैरती, मुजरिमाना ज़हनियत (अपराधी मनोवृत्ति) और बेराह रवी (पथ भ्रष्टा) जैसी खराब आदतों और ख़सलतों को जन्म देती है।

मौजूदा जवानों में तबाहकुन खेलों का जुनून :

मौजूदा ज़माने की बहुत बड़ी ट्रेजडी और तकलीफ़देह बात, तबाहकुन बरबाद करने वाले खेल कूद हैं खेल, खेल हैं वर्ज़शी, व्यायाम वाले खेल शरीअत में मना नहीं है अगर शरअ के हुदूद के अन्दर हों, लेकिन खेल को मक़सदे ज़िन्दगी जीवन उद्देश्य बना लेना इस्लामी उसूलों (नियमों) से न सिर्फ मेल नहीं खाता बल्कि टकराता है, आज राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर खेलों के नाम पर नौजवान तब्क़े (वर्ग) को मेहनत व अमल, जिद्दो जेहद (दौड़ भाग) आविष्कार और रचनात्मक कार्य के मैदान से दूर रखने की भयानक साज़िश (षडयंत्र) हो रही है। यह खेल व्यक्तिगत, सामूहिक, राष्ट्रीय हर सतह पर हद दर्जे ख़तरनाक और नुक़्सानदेह (हानिकारक) हैं।

व्यक्तिगत रूप में नौजवान वर्ग अपनी दिमाग़ी योग्यता और शारीरिक क्षमता नष्ट कर रहा है, खेल, खेल नहीं बल्कि जीवन उद्देश्य बन चुका है उसके जीवन का हर पल किसी मशहूर खिलाड़ी की "खाके पा" पैरों की धूल हासिल करने की फ़िक्र में गुज़रता है, कुछ खेल तो इस क़दर महंगे हैं कि मालदार तबका (वर्ग) भी इसका पेट भरने से असमर्थ है। खेल का यही तूफानी जज़्बा बेकार नौजवानों को चोरी और डकैती की चौखट पर खड़ा करता है इन खेलों में शरई आदाब (मजहबी नियम) और रिआयत तो दूर की बात है, खुले आम शरई अहकाम (मजहबी आदेश) तोड़े जा रहे हैं और उनकी अनदेखी की जा रही है। आपने बारहा देखा होगा कि मस्जिद से करीब मैदान में मैच हो रहा है वहीं अज़ान व जमाअत हो रही है, खेल का माइक अपनी तमाम तर (पूर्णतया) कूवत व ताक़त के साथ चीख़ रहा है, नमाज़ अदा करनी मुश्किल होती है खिलाड़ी मस्जिद में क्या आएंगे बहुत से बज़ाहिर दीनदारों की नमाजें भी इन्हीं खेलों की नज़र (भेंट) हो जाती हैं।

इन खेलों का एक पहलू इक्तिसादी नुकसानात (आर्थिक हानि) हैं, कुछ खेलों में सारी पब्लिक टूट पड़ती है, कारोबार ठप होकर रह जाते हैं, सरकारें इन खेलों पर बेतहाशा दौलत बहाती हैं, इनके लिये बेजा ख़र्च और तैयारी होती है, यह सब कुछ खासतौर पर उन मुल्कों में होता है जिनकी नव्वे फीसदी आबादी गरीबी की रेखा के नीचे ज़िन्दगी गुज़ारती है, वह एक एक लुकमे की मुहताज है, पीने के लिए पानी मुयस्सर (उपलब्ध) नहीं, तालीम के वसाएल (साधन) नहीं, ज़रूरियाते जिन्दगी से महरूम (वंचित) हैं, लेकिन खेलकूद के लिए उन हुकूमतों को "कारून का ख़जाना" हाथ आ जाता हैं।

इन खेलों की तारीखें मुक़र्रर (नियुक्त) करने में खास तौर पर पूर्वी और इस्लामी देशों में परीक्षा के समय को जानबूझ कर सामने रखा जाता है। यह वह वक्त होता है कि तालिब इल्म (विद्यार्थी) अपनी मेहनत और मशक़्क़त

से इम्तिहान में ऊंचे नंबर हासिल करके अपनी काबिलयत (योग्यता) का सुबूत दें और तालीम के मैदान में बेशबहा (बहुमूल्य) होने वाली दौलत का हक़ अदा करें, क़ौम और मुल्क की आरजूओं और तमन्नाओं को पूरा करें, क़ौम व मिल्लत की ख़िदमत करने के अहल (पात्र) बनें, सारा वक़्त इन्हीं खेलों के देखने की भेंट हो जाता है। रात रात भर टीवी पर टकटकी बांधे खड़े रहने के बाद वह दिमाग़ी और शारीरिक तौर पर निढाल हो जाते हैं और फिर परीक्षा में सफलता के लिए दूसरे 'सफल' साधन की तलाश में लग जाते हैं, आखिर इस तालीमी बरबादी (शिक्षा हानि) की कोई हद (सीमा) होगी, ज़िम्मेदार लोग इस पर ध्यान देंगे? या नई नस्ल (सन्तान) को खेल कूद की भेंट चढ़ा देने का पूरा इरादा कर लिया गया है।

इस्लामी दृष्टिकोण से खेल, खेल हैं, जीवन उद्देश्य नहीं, इस्लाम हक़ीक़त व संजीदगी (वास्तविकता और गंभीरता) का दीन, खेलकूद का नही मेहनत कशी और जिद्दोजहद का दीन है। आराम परस्ती और वक़्त की बरबादी का दीन नहीं, लिहाज़ा हर ऐसा खेल नाजाएज़ और हराम है। जिसमें वक़्त की बरबादी हो, जो दिमाग़ी सलाहियत और जिस्मानी ताक़त को मफलूज (बेकार) करदे जिससे इबादतों में तारवीर (विलंब) या उनका पूरे तौर पर छोड़ना ज़रूरी हो जाए जिससे पाक दामनी और इज़्ज़त पर आंच आए, जो शर्म व हया का दामन तार तार कर दे जिससे इस्लामी वैलूज़ और तरीकों को खतरह हो, हा ऐसा खेल जाएज़ है जिससे ज़ेहनी व जिस्मानी कूवत मिले, जिससे काम के मैदान में हिम्मत को बढ़ावा मिले, जिससे सामाजिक जिन्दगी में तआउन (सहयोग) मिले।

मौजूदा नौजवान और अशलील पत्रिकाएं:

प्रचार और प्रसार के साधनों का एक ख़तरनाक पहलू और संगीन नतीजा, अशलील लिटरेचर और पत्रिकाओं का सैलाब है, जन साधरण सड़कों, गली कूचों, रेलवे स्टेशनों और बस स्टैण्डों के बुक स्टाल फुहश (अशलील) लिटरेचर से भरे पड़े रहते हैं पूरी नंगी और आधी नंगी तस्वीरें इन पत्रिकाओं का अनिवार्य भाग है। आज नीन्द से उठने के बाद नौजवानों की पहली नज़र इन्हीं फुहश (अश्लील) अखबारों और पत्रिकाओं पर पड़ती हैं, जिनमें हैजान अंगेज (अशांति प्रद) तस्वीरें और आरटिकल्स होते हैं जिनसे जवानी की आग भड़कती है, फिलमी मेगज़ीन और नाविलें पढ़ पढ़ कर नौजवान तबक़ा हर तरह के ज़ेहनी अमराज़ (मानसिक रोग) का शिकार है और बेरहरवी (पथभ्रष्टा) की तमाम हदों को पार कर लिया, ज़ेहनी फ़िकरी अय्याशी उसके जीवन का अटूट अंग बन चुका है। बेहयाई (अश्लीलता) और नंगेपन को समाज में फैलाने का इन पत्रिकाओं और नाविलों ने बड़ा रूल अदा किया, बहुत कम घर इस आफ़त से सुरक्षित रहे, नव शिक्षित वर्ग तो इसको उन्नति और स्वतंत्रता का नाम देता है कि घर का हर छोटो बड़ा अखबार और मेगज़ीन पढ़े, आज नाविल निगारी एक "सभ्य कला" और "सम्मानित धंधा" बन चुकी है। नाविल लेखक को बड़े बड़े ऊंचे सम्मान और पुरस्कार दिये जाते हैं क्योंकि उसने नौजवान वर्ग की अनुचित भावनाओं को भड़काने और ग़लत डगर पर चलाने में महत्व पूर्ण रोल अदा किया है। इस्लाम ने पहले ही दिन से "फुहश गोई" (अशलील बातें) और तस्वीरकशी पर पाबन्दी आएद करके उसकी जड़ ही काट दी।

मौजूदा ज़माने के नौजवान और नशाबाज़ी:

वर्तमान काल का एक तबाह कुन फैशन, नशा लाने वाली चीजों का इस्तेमाल है, ऊंचे से लेकर नीचे वर्ग में उनका इस्तेमाल ज़िन्दगी का रोग बन चुका है, ऊंचे घरानों में शराब, दस्तर खुवान का अनिवार्य भाग है, जब तक शराब जैसी मनहूस चीज का दौर न चले कैफ (मस्ती) नहीं आता, इस्लामी दृष्टि कोण से शराब नापाक और शैतानी काम है, अल्लाह तआला की नाराज़गी आपसी दुशमनी यादे इलाही और नमाज़ से गफ़लत पैदा करती है कुरआन और हदीस में इसकी हुरमत और उसके खतरनाक असरात की निशान्दही की गई है। क्योंकि उसकी वजह से तमाम घरेलू मआमलात और सामाजिक व्यवस्था तहस नहस होकर रह जाती है।

इसी तरह सिगरेट नोशी के दीनी और जिस्मानी (शारीरिक) दोनों हैसियत से बहुत ज़ियादा नुकसान है, दीनी नुकसान यह कि जो शख्स शराब पीने का आदी है उसके लिये इबादात खास तौर से रोज़ह रखना बहुत दुश्वार है, शराब की वजह से बुरे लेागो की सोसाइटी में आदमी पहुंच जाता है, यह रोज की देखी हुई बात है। जिस्मानी (शारीरिक) नुक़सानात बहुत हैं, जिस्म (शरीर) निढाल हो जाता हे, निगाह

कमजोर होती है, बदन की रग, रग उससे मुतास्सिर (प्रभावित) हो जाती है। आदमी जो कुछ खाता है उसके बदन में नहीं लगता, आसाबी ताक़त (मानसिक शक्ति) खत्म हो जाती है। भूक नहीं लगती, बद हज़्मी हो जाती है, खांसी नज़ला और कभी कभी दम घुटने की शिकायत हो जाती है, बहुत से ऊंचे डाक्टरों ने लिखा है कि सीने के रोगों में सिगरेटनोशी का बड़ा दख़ल है कैन्सर जो निहायत ख़तरनाक मर्ज़ है उसका एक बड़ा सबब यही सिगरेट नोशी है।

सिगरेटनोशी के माली नुकसानात किसी से ढके छुपे नहीं इससे बढ़कर माली बरबादी क्या हो सकती है कि इनसान अपनी खून पसीने की कमाई से हलाकत और बरबादी का सामान पैदा करे मौजूदा नवजवानों के रोगों में से एक बड़ा रोग यह भी है कि वह वक्त बरबाद करते हैं, मेहनत बिल्कुल नही करना चाहिते, होटलों में बैठकर गपशप करते हैं और सुबह से शाम कर देते हैं, जवानी की उम्र ताकत व कूवत का खजाना होती है, सच तो यह था कि अपने दीनी और दुन्यावी फाइदे में इसको ख़र्च किया जाता अपने लिये और अपनी कौम व मिल्लत के लिए कोई मुफीद तरीन (अति लाभदायक) काम अन्जाम दिया जाता, लेकिन इसका तसव्वुर (विचार) ही ख़त्म होता जा रहा है सेहत और फ़ुरसत (स्वास्थ्य और औकाश) दो ऐसी नेअ़मत हैं जिनकी कद्र व क़ीमत ख़ास तौर पर नौजवान तबके (वर्ग) से उठती जा रही है, इन नेअ़मतों के बारे में ज़ियादा तर लोग धोके में रहते हैं। नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया :

दोनो नेअ़मतें ऐसी हैं, जिनके बारे में बहुत से लोग धोके में हैं : एक सेहत व तन्दुरस्ती (निरोग, भला चंगा) दूसरे फ़ुरसत व फ़रागत (अवकाश, विश्राम क़ाल) हक़ीकत यह है कि जब इनसान को सेहत व तन्दुरूस्ती मिल जाती है तो वह सोचता भी नहीं कि कभी वह बीमार भी होगा या उसके पास बीमारी आ सकती है, जब तक फ़ुरसत फ़रागत है उसे यह धोका रहता है कि मसरूफियत नहीं होगी।

यह तो नफ़्स का बहुत बड़ा धोका है कि अभी नौजवान हैं, क्या उम्र बीत गई कि अभी से नेक कामों में लग जाएं, अभी ज़रा मज़े उड़ा लें फिर तोबा कर लेंगे, नौजवान वर्ग को इल्म नहीं कि क़ियामत के दिन जब तक जवानी का हिसाब किताब न देलेंगे क़दम नहीं हिला सकते, नवजवानों को जवानी की क़ीमत पहचाननी चाहिए कि जवानी के बाद दो ही रास्ते हैं: मौत या बुढ़ापा तीसरा कोई रास्ता नहीं, मर गए तो मर गए और अगर बूढ़े हो गए तो सारी ताक़त व कूवत ख़त्म हो जाती है बल्कि यह हाल हो जाता है कि मुंह में दांत न पेट में आंत ।

साल गिरह (बर्थ डे) या मातम:

पश्चिमी सभ्यता की एक देन साल गिरह मनाना है अर्थात ज़िन्दगी का एक साल कम हो गया तो मोम बत्तियां सुलगाएंगे, केक काटेंगे और न जाने क्या क्या खुराफ़ात करेंगे, अकबर इलाहाबादी ने इसके बारे में बड़ा हकीमाना शेर (वैज्ञानिक पद्य) कहा है– जब साल गिरह हुई तो उक्दह यह खुला यहां ज़िन्दगी का एक साल जाता है

●●●

सच्चा राही स्वयं पढ़ें, साथियों को पढ़ायें, अन्धेरे में उजाले के लिए, अज्ञानता में ज्ञान के लिए, असन्तोष में सन्तोष के लिए, अनीति में नीति के लिए, अशान्ति में शान्ति के लिए, अव्यवस्था में व्यवस्था के लिए, बुराई से भलाई की ओर, स्वार्थ से परोपकार की ओर, तंगी से विशालता की ओर, असत्य से सत्य की ओर, अनेक से एक की ओर, तोड़ से जोड़ की ओर, बिगाड़ से बनाव की ओर, के लिए 'सच्चा राही' पढ़ें।

'सच्चा राही' के सर्कुलेशन में अपना सहयोग दें।

अपने विचार हमें लिखते रहें।

पता और खरीदारी नम्बर साफ़ साफ़ लिखें।

सह–सम्पादक

अल्लाह के दोस्त व नादोस्त

मो० हसन अन्सारी

कुर्आन अल्लाह का कलाम है जो आख़िरी नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाजिल हुआ, (उतरा) और जो अल्लाह से डरने वालों के लिए हिदायत व मार्ग दर्शन की किताब है। कुर्आन में जो कुछ बयान हुआ है उस में मानव समाज के दो तरह के लोगों का उल्लेख भी है, एक वह जिनको खुदा दोस्त रखता है दूसरे वह जिन्हें खुदा दोस्त नहीं रखता है। यह बयान कुर्आन में अनेक बार अलग अलग जगहों पर आया है कुर्आन की उन आयतों को, जिनमें ऐसे लोगों का बयान है जिन्हें खुदा दोस्त रखता है अथवा दोस्त नहीं रखता है, को एकजा करके यहां उनका हिन्दी अनुवाद लिखा जाता है। इन आयतों में उन आयतों की संख्या जिन्हें अल्लाह का दोस्त रखता है चौदह हैं और जिन्हें अल्लाह दोस्त नहीं रखता है पचीस हैं और यह कि इन दोनों खानों की कुल आयतों में से अधिकांश आयतें कुर्आन के शुरू की सूरतों में आई हैं। नादोस्त का अधिक होना इस बात की तरफ इशारा है कि समाज में बुराइयां अधिक और अच्छाइयां कम हैं, इस्लाम अच्छाई का हुक्म देने उसे उजागर करने और बुराई को रोकने की तालीम देता है। आज समाज में जो बुराइयां व्याप्त हैं उन्हें समाप्त करने का एक उपाय यह भी है कि हर समझदार व्यक्ति अपने को उस खाने में रखने और उसमें अपनी जगह बनाने का प्रयास करे जिसमें उन लोगों का बयान है जिन्हें अल्लाह दोस्त रखता है। यही इस संकलन का मक़सद और उद्देश्य है।

अल्लाह दोस्त रखता है।	अल्लाह दोस्त नहीं रखता है।
१. अल्लाह महब्बत फरमाता है तौबा करने वालों से और खूब पाक साफ रहने वालों से। (२:२२२)	१. और अल्लाह तआला जालिमों से महब्बत नहीं रखता। (३–१४०)
२. और अल्लाह तआला नेकी करने वालों की महबूत रखता है। (३–१४८)	२. बेशक जो लोग खियान करने वाले गुनहगार हैं अल्लाह उनसे महब्बत नहीं करता है। (४–१०७)
३. अल्लाह तआला दोस्त रखता है अल्लाह पर भरोसा करने वालों को। (३–१५६)	३. बेशक बेइन्साफ लोगों को अल्लाह रास्ता नहीं बतायेगा। (५–५१)
४. बेशक अल्लाह नेक स्वभाव वाले लोगों को पसंद करता है। (५–१३)	४. और अल्लाह तो फसाद करने वालों को पसंद नही करता। (५–६४)
५. बेशक इन्साफ करने वालों से अल्लाह महब्बत करता है। (५–४२)	५. बेशक इन्कार करने वालों को अल्लाह हिदायत देने वाला नहीं। (५–६७)
६. और अल्लाह तो महब्बत करता है नेकी करने वालों से। (५–६३)	६. और हद से आगे न बढ़ो बेशक ज्यादती करने वालों को अल्लाह पसंद ही नहीं करता। (५–८७)
७. अल्लाह तो सब्र करने वालों के साथ है। (८–४६)	७. और अल्लाह तआला फासिक लोगों को हिदायत नहीं देता। (५–१०८)
८. और अल्लाह साबित कदम रहने वालों के साथ है। (८–६६)	८. बेशक अल्लाह तो बे इन्साफ कौम को हिदायत नहीं करता। (६–१४५)
९. बेशक अल्लाह तो उन लोगों से महब्बत फरमाता है जो अपने इकरार का लिहाज करते हैं। (९–४)	९. बेशक अल्लाह उन लोगों से महब्बत नही रखता जो हद के अन्दर नहीं रहते। (७–३१)
१०. अल्लाह तो वाकई उन लोगों से महब्बत फरमाता है जो वादा खिलाफी से डरते हैं। (९–७)	१०. जो लोग हद से आगे बढ़ते हैं अल्लाह उन को पसन्द

११. और जान लो अल्लाह मुत्तकीयों (संयमीयों) के साथ है। (६–३६)

१२. अल्लाह परहेजगारों के साथ है। (६–१२३)

१३. बेशक अल्लाह खैरात देने वालों को बहुत अच्छा बदला अता फरमाता है। (१२–८८)

१४. बेशक न्याय करने वालों से अल्लाह महब्बत रखता है। (६०–८)

मंजूम अकाइद

मौ० फ़तेह् मुहम्मद ताइब

ख़ुदा एक है दिल से जानो यक़ीं
सिवा उसके माबूद कोई नहीं
हर इक शै पे हाकिम है कादिर है वह
हर इक जा पे हाज़िर है नाज़िर है वह
उसी ने किया ख़ल्क़ हर ख़ैरो शर्र
नहीं फ़ेले बद से वह राज़ी मगर
फ़िरिश्ते हैं नूरानियो बे गुनाह
वो जिब्रील लाते थे हुक्मे इलाह
किताबें हैं जितनी ख़ुदा की तमाम
वह सब हक़ हैं उन में नहीं कुछ कलाम
बुज़ुर्ग और हक़ गर्चि हैं अंबिया
मगर सब के सरदार हैं मुस्तफ़ा
मुहम्मद नबी साहिबे मुअ़जिज़ात
अ़लैहिस्सलामो अ़लैहिस्सलात
दिया हक़ ने उनको वो क़ुर्आने पाक
कि ला रैब फ़ी जिस की है शाने पाक
खलीफ़ा भी तर्तीब से चार हैं
वो हैं पेश्वा और सरदार हैं
अबू बक्रो फ़ारूक़ो उस्मा अ़ली
कि थे हम्दमो जानशीने नबी
जो अस्हाबो औलादो अज़वाज हैं
वो हैं पेश्वा और सरताज हैं
सुवाले नकीरैन है गोर में
जियेगा हर इक हश्र के शोर में
लिया जाएगा फिर हिसाबो किताब
बकद्रे अमल है अ़ज़ाबो सवाब
बजा औलिया की करामात है
नुजूमी की झूटी हर इक बात है।

नहीं करता। (७–५५)

११. और जालिम कौम को अल्लाह हिदायत नहीं दिया करता । (६–१६)

१२. और अल्लाह के फरमान का जो लोग लिहाज नहीं रखेंगे, अल्लाह उनको हिदायत नहीं देगा।

१३. और अल्लाह मुन्किरों को सीधी राह की सूझबूझ नहीं देता। (६–३७)

१४. और अल्लाह फासिक और नाफरमान लोगों को राह सूझने नही देता। (६–८०)

१५. अल्लाह खियानत करने वालों के फरेब को चलने नहीं देता। (१२–५२)

१६. और यह कि अल्लाह मुन्किरों को हिदायत नहीं देता। (१६–१०७)

१७. अल्लाह जालिम कौम को हिदायत नहीं देता। (२८–५०)

१८. अल्लाह इतराने वालों को पसंद नहीं फरमाता। (२८–७६)

१९. अल्लाह फसाद (उपद्रव) करने वालों को पसंद नहीं फरमाता । (२८–७७)

२०. बेशक बात यह है कि इन्कारी लोग अल्लाह की महब्बत से महरूम रहेंगे। (३०–४५)

२१. अल्लाह किसी भी ऐसे आदमी को पसन्द नही फरमाता जो अपनी बड़ाई हांकता है और घमण्ड जाहिर करता है। (३१–१८)

२२. सच्ची बात यह है कि अल्लाह किसी ऐसे शख्स को हिदायत नहीं दिया करता जो झूठा हो और कट्टर काफिर भी हो। (३९–३)

२३. बेशक अल्लाह जालिम कौम को हिदायत नहीं देगा। (४६–१०)

२४. और अल्लाह किसी भी इतराने वाले बडाई हाकनेवाले से महब्बत नहीं फरमाता। (५७–२३)

२५. बेशक अल्लाह नाफरमान लोगों को हिदायत की राह नहीं दिया करता। (६३–६)

(पृष्ठ २८ का शेष)

अजाब है।

जिस्मानी तक्लीफों में शैतान से बचने की तदबीरें (उपाय):

शैतान (जिन्न) का अस्ल मक्सद तो इन्सान की आखिरत बरबाद करना है लेकिन इस दुन्या में भी वह इन्सानों को तक्लीफ पहुंचा कर खुशी पाता है फिर इन तक्लीफों के जरीअे वह इन्सानों को नाशुक्री या नाजाइज इलाज में फंसा कर आखिरत का नुक्सान भी करता है। लेकिन अल्लाह के खास बन्दे जब तक्लीफ पर तौबा इस्तिग़्फ़ार में लगते है तो शैतान तिलमिला उठता है। वाज़ेह रहे कि इन दुन्यावी तक्लीफों से बचने के लिए दुन्यावी तदबीरों दवा इलाज के साथ तौबा व इस्तिग़्फ़ार बहुत जरूरी है। पांचो फर्ज़ नमाज़ों के बाद आयतुल कुर्सी का पढ़ना बहुत ही फाइदेमन्द है।

अल्लाह और रसूल की फरमाबरदारी ही में सफलता है

अब्दुर्रशीद खैरानी

अल्लाह तआला अपनी किताब कुरआन पाक में ईमान वालों को खुशअखलाकी बरतने की हिदायत करता है। अल्लाह तआला अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जरिए से लोगों को आपस में मिल जुलकर अदब व इज्जत से रहने का हुक्म देता है! कुरआन पाक की सूर हुजरात की आयत नम्बर १ से ५ में हुक्म देता है कि:

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरते रहा करो यकीनन अल्लाह ताआला सुनने जानने वाला है।

ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज पैगम्बर की आवाज से ऊंची न करो और न उससे ऊंची आवाज से बात करो, जैसे आपस में एक दूसरे से करते हो कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आमाल बरबाद हो जाएं और तुमको खबर भी न हो जो लोग अल्लाह के रसूल के आगे अपनी आवाजे पस्त (धीमी दबी) रखते है वही वो लोग है जिनके दिलों को अल्लाह ने तकवा के लिए जांच लिया है इनके लिए माफी है और बड़ा सवाब है जो लोग आपको हुजरे के बाहर से पुकारते है इनमें से अकसर समझ नहीं रखते और अगर वो सब्र करते यहां तक कि आप खुद उनके पास निकल कर आ जाएं तो यह इनके लिए बेहतर होता और अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है। (आयत १से५)

कुरआन की सूर–ए–हुजूरात की इन आयत में अल्लाह तआला अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा आदाब सिखाता है कि तुम्हे अपने नबी की तौकीर व एहतिराम करना जरूरी है। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अल्लाह तआला से आगे मत बढ़ो का मतलब यह है कि अल्लाह तआला के हुक्मों और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फरमान व राय से अपनी राय को ऊपर करना हराम है। यानी अल्लाह की किताब और रसूल स० अ० स० की सुन्नत व फरमान पर अपनी राय को मुकदम ऊपर समझना यही अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आगे बढ़ना है। हजरत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला फरमाते है कि इसका मतलब किताब व सुन्नत के खिलाफ न कहना है हजरत दहाक रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते है कि शरई अहकार्म में अल्लाह की किताब और उसके रसूल स० अ० स० की सुन्नत व हदीस के सिवा तुम किसी और चीज़ से फैसला न करो। अल्लाह तआला ईमान वालों को हुक्म फरमा रहा है कि अल्लाह की किताब कुरआन पाक में दिये गये हुक्मों और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतों व फरमानों व हिदायतो से आजाद होकर अपनी राय अकल का इस्तेमाल करते हुए राय कायम मत करो। अल्लाह तआला की किताब के हुक्मों में अपनी अक्ल लगा कर राय कायम करना गुनाह है! अल्लाह तआला ऐसा करने से रोक रहा है और फरमाता है कि कुरआन पाक और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत व हदीसों में अपनी राय से काम लेने से अल्लाह से डरो क्योंकि अल्लाह तआला सब चीज से बाखबर है।

इसके बाद फरमाता है कि नबीसल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की आवाज से बातचीत करते वक्त अपनी आवाज को बुलन्द व तेज न करो। यह याद रखो कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल की लाई हई हिदायत दुनिया में आप की कायम मकाम है और अब इस हिदायत के मुताबिक चलना ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सच्ची महब्बत है! क्योंकि अल्लाह तआला फरमा रहा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मरतबा सबसे ऊंचा है उनकी इताअत करना हर बन्दे पर फर्ज है। आज सल्लल्लाहुअलैहिवसल्लम की सुन्नतों पर पूरा पूरा अमल करना एहतियात (सावधानी) के साथ जरूरी है। इसमें किसी भी किस्म की ढिलाई या बेपरवाही सभी नेक अमलों को बरबाद कर सकती है।

सही हदीस में है कि एक शख्स अल्लाह की रजामंदी का कोई कलमा (बात) ऐसा कह जाता है कि इसके कलमे की कोई अहमियत नहीं होती लेकिन अल्लाह तआला को वह इतना पसन्द आता है कि वह इसकी वजह से जन्नती हो जाता है। इस तरह अल्लाह तआला की नाराजगी का कोई ऐसा कलमा कह जाता है कि इसके नजदीक तो उसकी कोई वकअत (महत्व) नहीं होती लेकिन अल्लाह

तआला इस कलमे की वजह से उसे जहन्नम की इस कदर नीचे के तबके में पहुंचा देता है कि जो गड्ढा जमीन और आसमान से ज्यादा गहरा है।

अल्लाह तआला फरमा रहा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने अपनी आवाज ध ीमी रखते हैं इन्हें अल्लाह तआला ने तकवा के लिए खालिस कर लिया है। अल्लाहतआला का कितना बड़ा करम है कि अपने नबी सल्ल० की शान को बरकरार रखने वालों को हिदायत देने का वायदा कर रहा है। यह बात आज भी हम पर लागू है। रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों व सुन्नतों को बिना किसी हिचकिचाहट के मानना हमारा पहला फर्ज बनता है। अल्लाह की किताब की इस आयात से यह साफ हो जाता है कि सुन्नतों एवं हदीसों को मानना ही अल्लाह की खुशनूदी का जरिया है। इमाम अहमद ने एक रिवायत नकल की है कि हजरत उमर फारूक रजिअल्लाह तआला अन्हु से लिखित जानकारी ली गई कि ऐ अमरीरूल मोमिनीन एक वह शख्स है जिसे नाफरमानी की ख्वाहिश ही न हो और न कोई नाफरमानी इसने की हो और वह शख्स जिसे गुनाह करने की ख्वाहिश है लेकिन वह बुरा काम नहीं करता तो इनमें अफजल कौन है? आप ने जवाब में लिखा कि जिन्हें गुनाह करने की ख्वाहिश होती है फिर नाफरमानियों से बचते हैं यही लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह तआला ने परहेजगारी के लिए आजमा लिया है इनके लिए मगफिरत है और बहुत बड़ा अजर (बदला) और सवाब।

इस तरह अल्लाह तआला बन्दों को अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इज्जत व एहतराम के हुक्म देकर बता रहा है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों व फरमानों की भी इज्जत करो और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपनी जान माल व औलाद से भी ज्यादा मुहब्बत रखो।

अल्लाह तआला हम सबको अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत (अनुसरण) करने की हिदायत अता करे ताकि दुनिया व आखिरत की कामयाबी मिले। (आमीन)

(पृष्ठ ३३ का शेष)

जाएगी।

प्रश्न : जमीन के कीड़े मकोड़े पाक हैं या नापाक?

उत्तर : ऐसे कीड़े मकोड़े जिन में बहता खून नहीं है सब पाक हैं, जैसे बिच्छू, छोटी छिपकली, छोटा सांप या दूसरे कीड़े मकोड़े जिनमें बहता (चलता) खून नही है सब पाक हैं, खाने की दवा में नहीं डाल सकते लेकिन अगर तबीब बताए तो लगाने की दवा में मिला सकते हैं। अल्बत्ता डिड्डी बेज़ब्ह हलाल है और पाक है।

प्रश्न : गूलर भुनगों समेत खाना कैसा है? बाज लोग कहते हैं कि भुनगों समेत गूलर खाने से आंख नहीं आती है?

उत्तर : भुनगों समेत गूलर खाना हराम खाना है, भुनगे निकाल कर खाएं।

प्रश्न : जिस सिरके में कीड़े पड़ गये हों उस सिरके का खाना जाइज़ है या नहीं?

उत्तर : बिल्कुल जाइज़ है बस सिर्का छान लिया जाए सिर्के में तो कीड़े पड़ते ही हैं।

प्रश्न: शहद के छत्ते से शहद निचोड़ते वक्त अगर शहद की मक्खी के कुछ बेजान बच्चे भी मल जाएं तो उस शहद के खाने का क्या हुक्म है?

उत्तर : शहद की मक्खी के बे जान बच्चे न मुर्दार हैं न जिन्दा जानवर न नापाक लिहाज़ा उस शहद के खाने में कोई हरज नहीं। अलबत्ता चाहिए कि इहतियातन अन्डे बच्चे अलग करके निचोड़ें जिस शहद में अंडे बच्चे मिल जाते हैं वह जल्द बू देने लगता है।

प्रश्न : एक औरत जिसका शौहर (पति) किसी खलीजी मुल्क (अरब देश) में था वह अपने छोटे बच्चों के साथ गाव के घर में रहती थी साथ में खुसुर भी रहता था वही घर का मालिक था। एक रात जब बच्चे सो रहे थे खुसुर उसके पास आ गया और रोकने से न माना उसने औरत के साथ मुजामअत (संभोग) कर लिया कुछ दिनों बाद जब शौहर आया तो उसने अपने शौहर से यह बात बताई। शौहर ने बाप के लिहाज़ (आदर) में चुपकी साध ली। ऐसी सूरत (दशा) में औरत अपने शौहर से तअल्लुक़ क़ाइम करे या कोई और शक्ल इख़्तियार करे ?

उत्तर : पूछी हुई सूरत में बीवी अपने शौहर के लिए हराम हो गई, अलग हो जाना ज़रूरी है । छोटे बच्चे मां की परवरिश में रहेंगे खर्च बाप के ज़िम्मे होगा। बच्चा हो तो सात बरस तक और बच्ची हो तो नौ बरस तक मां को परवरिश का हक़ हासिल है।

लेकिन ऐसे क़ज़ीयों में फत्वे पर अमल न करके शरीअत के क़ाज़ी से फ़ैसला कराएं, क़ाज़ी सूरते हाल की तहक़ीक़ कर के फ़ैसला करेगा, जब कि इस मसअले में इख़्तिलाफ़ भी है चुनांचि शाफ़ओ मसलक और अहले हदीस मस्लक में ज़िना से मुसाहिरत की हुरमत साबित नहीं होती।

शैतान जिन्न से बचने की तदबीरें

अबू मर्गूब

कुर्आने मजीद से साबित है कि हजरत अय्यूब (अ०) को शैतान ने जिस्मानी तक्लीफ पहंचाई और उन्होंने अपने रब से फरयाद करते हुए अर्ज किया कि "शैतान ने मुझ को रंज और तक्लीफ पहंचायी" (स्वादः ४१) सूर–ए–बकरा में है कि सूद खाने वालों को कियामत के रोज ऐसे उठाया जाएगा जैसे शैतान ने छूकर खब्ती बना दिया हो। (आयत २६५) इससे मालूम हुआ कि शैतान लोगों को छूकर खब्ती बना देता है।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक दुआ में है किः "ऐ अल्लाह मैं आप से इस बात की पनाह मांगता हू कि मौत के वक्त शैतान मुझ को खब्ती कर दे। (मुस्नद अहमद ३:४२६)

मुस्नद अहमद में एक हदीस का मफ्हूम इस तरह है कि हूजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत की हलाकत तअ़न और ताऊन से है जो तुम्हारे दुश्मन का निशाना है, इन में से हर एक में शहादत है।"

तअ़न नेजे (बल्लम) या किसी नोकदार चीज से मारने को कहते हैं और ताऊन प्लेग की बीमारी को कहते है और हदीस में तुम्हारे दुश्मन से मुराद शैतान है।

मुस्नद ईमाम अहमद जिल्द ६ पृष्ठ ४३६ पर एक हदीस में है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्तिहाजा वाली औरत से फरमाया कि यह यानी इस्तिहाजा शैतान के धक्कों में से एक धक्का है या लात्तियों में से एक लत्ती है। मुस्नद ही की जिल्द ४ पृष्ठ १४० पर एक हदीस है जिसे अबू दाऊद ने भी नक्ल किया है सिजका खुलासा इस तरह है किः

ज़ारेअ़ बिन आमिर अल अब्दी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत मे अपने एक अजीज को लेकर हाजिर हुए और दुआ की दरख्वास्त की उस पर जुनून था। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस की पीठ पर मारते जाते थे और कहते जाते थे, "उखरूज् अदुव्वल्लाह।" निकल अल्लाह के दुश्मन निकल अल्लाह के दुश्मन। फिर उसे सामने बिठाया, पानी मंगाकर उसके चेहरे पर मला और दुआ की, मरीज अच्छा हो गया।

मुसनद इमाम अहमद जिल्द ४ पृष्ठ १७० पर एक हदीस में यूं है कि एक औरत ने अपने बच्चे के बारे में शिकायत की कि इस को किसी बला की शिकायत है आप ने बच्चे के मुंह में तीन बार फूंका और फरमायाः बिस्मिल्लाहि व अना अब्दुल्लाहि इख्सा अदुव्वल्लाहि (अल्लाह के नाम से, मैं अल्लाह का बन्दा हूं, दूर हो अल्लाह के दुश्मन) इस अमल से बच्चा अच्छा हो गया।

शैख उमर सुलैमान अशकर ने अपनी किताब "आलमुल जिन्नि वशशयातीन के पृष्ठ ६२ पर इमाम अहमद बिन हंबल का एक कौल नक्ल करते हैं कि मस्रूअ (जिस पर शैतान सवार हो गया हो) के जिस्म में शैतान दाखिल होकर मस्रूअ की जबान से बात करता है और जो लोग इस का इन्कार करते है वह झूठे हैं।

ऊपर के बयानात से साबित हुआ कि शैतान जिन्न इन्सान को नीचे लिखी तक्लीफें पहुंचाता रहता है।

इन्सान को खब्ती बना देता है

इन्सान को मजनून (पागल) बना देता है।

आसेब में मुब्तला करता है।

ताऊन में मुब्तला करता है

औरतों को इस्तिहाजे में मुब्तला करता है

इस का इम्कान है कि इन के अलावा और तक्लीफें भी पहुंचाता हो जैसे दर्द, उलझन चक्कर वगैरह भुला देना तो अल्लाह की किताब ही से साबित है सूर–ए–कहफ़ आयत ५६ में हैं कि "मुझ को शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उसका जिक्र करता।

यहां यह बात समझ लेना चाहिए कि जिन्न (शैतान) दीनदारों परहेजगारों को कोई तक्लीफ नहीं पहुंचा सकता है सिवाए इसके कि वह गाफिल हो जाएं और अल्लाह को याद करते ही वह भाग खड़ा होगा या अल्लाह की कोई खास मसलहत हो जैसे अय्यूब अलैहिस्सलाम कि वहां गफलत न थी मस्लहत थी। यह भी याद रहे कि तअन और ताऊन से शहादत सिर्फ उम्मते मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिए है दूसरों के लिए

(शेष पृष्ठ २५ पर)

उर्दू शायरी में

हिन्दू तहज़ीब की अक्कासी का तआरूफ व तज्ज़िया

डा० एम० नसीम आज़मी

वह कौम भी है बाइसे–रूस्वाइये तहजीब जिस कौम की तहजीब के आसार जले हैं।

अदबी दुनिया के लिए "असर अंसारी" की शख्सीयत किसी तआरूफ की मोहताज नहीं है। क्योंकि "असार अंसारी" लगभग साठ (६०) सालों से किसी सताइश की तमन्ना और सिले की परवाह किये बगैर लगातार उर्दू जबान व अदब की खिदमत में मस्रूफ हैं। उनकी शायरी की शुरूआत हिन्दुस्तान की तहरीके आजादी के अहद–ए–शबाब १६४२ से होती है। उनकी पहली इन्कलाबी नज्म हिन्दुस्तान के तालिब–ए–इल्म मोजाहिद–ए–आजादी में कभी मक्बूल हुई थी। उस वक्त अंसार अंसारी खुद भी तालिब–ए–इल्म थे और पढ़ाई छोड़कर हिन्दुस्तान की तहरीक–ए–आजादी में शामिल हो गये थे।

असर अंसारी की शायरी का आरम्भ अगरचः इन्कलाबी नज्म से हुआ था लेकिन वह बुनियादी तौर पर गजल के शायर हैं और गजल की सिन्फ उन के मेजाज के ऐन मोताबिक भी है। उन्होंने अपनी गजलों से उर्दू के गजलिया सरमाये में बेशबहा इजाफे भी किये हैं। बल्कि उर्दू शायरी में क्लासिकल रचाव के एहिया की जो तहरीक मौलाना हस्रत मोहानी ने शुरू की थी और जिसे रघुपति "फिराक गोरखपुरी" ने आगे बढ़ाया था उसे असर अंसारी ने न केवल बाकी रखा है बल्कि उसमें मजीद वुसअत पैदा करने का अहम तरीन कारनामा भी अंजाम दिया है जिस का जिन्दा सुबूत उनकी गजलों क्लासी रचाव की लतीफ मौजूदगी है। "असर अंसारी की अब तक कुल दस (१०) किताबें शाय हो चुकी है। इस तरह उनके कुल तख्लीकी सरमाये में छः (६) शेरी मज्मूयें और चार नसरी किताबे शामिल हैं जो दर्ज जेल है।

१. कम व कैफ– १६७४ २. अफ्कार–ए–परीशां–१६८०

३. जबान–ए–गजल–१६८७ ४. आइना दर आइना–१६६२

५. पैराहन–ए–गुल–१६६७ ६. नवा–ए–सरोश–२००१

मज्कूर बाला छ शेरी मज्मूओं में आइना दर आइना नज्मों का मज्मूआ है और नवा–ए–सरोश हम्द व नात का बाकी चारों मज्मूए "कम व कैफ" अफ्कार–ए–परीशां, "जबान–ए–गजल" और पैराहन–ए–गुल में उनकी गजलें शामिल हैं। इसी तरह उनकी चारों नसरी किताबों की तफ्सील जेल में है।

१. "सफर–ए–हज के शब व रोज" १६७६ २. "तज्किरा सोखन व रान–ए–मऊ १६८१ ३. दबिस्तान–ए–शिब्ली के नामवर इन्शा परदाज़ १६८० ४. उर्दू शायरी में हिन्दू तहजीब की अक्कासी २००१

उर्दू जबान हिन्दुस्तान में एक मुश्तर्का कल्चर के क्याम के तौर पर बजूद में आयी है यही वजह है कि इस जबान के मेजाज में ही वुसअत हमहगीरी और सेकूलरिज्म शामिल है जिस में सभी मजाहिब, अकायद रस्म व रिवाज, तहजीब व सकाफत और सभी फिरकों के हालात व मसायल की तरजूमानी की खूबियां मौजूद हैं। यह जबान किसी मख्सूस मजहब, इलाके या फिरके की भी जबान नहीं है, हमहगीरी और हमहजेहती इस जबान की खास शनाख्त है इसलिए आजाद हिन्दुस्तान में कशमीर से कन्याकुमारी तक और पंजाब से आसाम तक अगर किसी एक जबान को हिन्दुस्तान की मुश्तर्का जबान होने का शर्फ है तो व सिर्फ उर्दू जबान को है और जब तक आजाद हिन्दुस्तान में उर्दू को आजादी से फलने फूलने और तरक्की के मवाके नहीं पैदा किये जायेंगे हिन्दुस्तान में असली कौमी तरक्की का तसव्वुर बेमानी रहेगा। क्योंकि उर्दू ही भारत की एक ऐसी जबान है जो सभी धर्मों, अकायद और तमददुन के मेल जोल के नतीजे में वजूद में आयी है। इसके अलावा इस जबान ने हिन्दुस्तान की तहरीक–ए–आजादी में अकेले जो गेरां माया खिदमत अन्जाम दी हैं उसकी मिसाल मिलना नामुम्किन है। इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा सिर्फ उर्दू जबान की देन है और हिन्दुस्तान की किसी और जबान में इस नारे का आज भी कोई बदल नहीं है इसी तरह उर्दू जबान में जो आफाकियत, हमागीरी और हिन्दुस्तानी अरजीयत और उस में बसने वाले तमाम लोगों, मजहब अकायद और तहजीब व सकाफत के अनासिर उर्दू जबान व अदब और शायरी में छाये हुए हैं।

"उर्दू शायरी में हिन्दु तहजीब की अक्कासी" असर अंसारी की अहम तरीन नसरी और तहकीकी किताब है। इस किताब में "असर अंसारी" ने उर्दू शायरों की उन नज्मों का इन्तेखाब और तहकीक व तज्जीया पेश किया है जिस

हिन्दुस्तानी अरजीयत, हिन्दू कल्चर, हिन्दू अकायद, हिन्दू फल्सफा, हिन्दू असातीर, में हिन्दू देव मालायें, रस्म व रिवाज, रहन सहन और शख्सीयत के तज्करे पाये जाते हैं। उर्दू जबान में इस किस्म की किताब की कमी थी असर अंसारी ने इस कमी को पूरा करने के साथ साथ उर्दू जबान व अदब और शायरी में हिन्दुस्तानी अरजीयत, तहजीब व सकाफत और तमददुनी अनासिर की तलाश व जुस्तजू के लिये एक नया रास्ता हम्वार कर दिया हे जो काबिल–ए–सताइश है इस किताब का इन्तेसाब भी हिन्दुस्तान की मिटती हुई गंगा यमुनी तहजीब के नाम हैं।

उर्दू शायरी में हिन्दू तहजीब की अक्कासी असर अंसारी की एक अहम तरीन किताब है जो १५० सफहात और चार अब्वाब में मुन्कसिम है। इब्तेदा में हर्फे आगाज़ के उनवान से असर अंसारी का दिबाचा और दो बातें के उनवान से मौलाना निसार अहमद क़ासिमी नदवी का मोकद्दमा शामिल है। किताब का पहला बाब उर्दू के मशहूर शायर मोहसिन काकोरवी के मशहूद नातिया कसीदा

सिम्ते काशी से चला जानिबे मथुरा बादल
बर्क़ के कांधे पे लाई है सबा गंगा जल

से शुरू होता है। इस बाब में ''नज़ीर अकबराबादी की नज्में'' मोतकीदात–ए–मजहब–ए–होनूद–बालपन में बांसूरी बजय्या, ''लहव लअबे कनहिया'' मौत की फिलासफी, शादी का पैगाम, बिसम कथा'' हुर की तारीफ, दुर्गा जी का दर्शन, महादेव का मेला कनहिया जी की रास, बलदेव जी का मेला जैसी नज्मों पर तज्जिया और तब्सरा शामिल है।

दूसरे बाब में पण्डित ब्रिज नारायण ''चक्वस्त'' की नज्में कृषण कनहिया, रामायण का एक सीन, फूलमाला, जगत मोहन लाल खां की नज्में चित्रकोट, रेहलत–ए–बाल, शक्ति बाण, तुलसीदास, पयाम–ए–रूक्मणी दो आईने मौलाना जफर अली की इत्तेहाद–ए–बैनल होनूद व मुस्लेमीन के उनवान से कही गयी नज्में, दुर्गा सहाय सुरूर जहानाबादी की हिन्दू मोतकेदात पर लिखी गयी नज्में जैसे सीताजी की गिर्या व जारी, नौबत राय नजर सीताजी, सिद्धनाथ बली फिराकी की रामायाण फिराकी दर्शन सिंह की बनवास, भगवान महाबीर पर कही गयी नज्में जीओ और जीने दो, मीन–ए–दानिश, धनपत राय राज लायल पुरी की दिवाली मुनव्वर लखनवी की हिन्दू अकायद व वाकियात पर लिखी गयी नज्में, नजीर अकबराबादी की ''हरि की सरपा, अल्लामा इक्बाल की राम , नया शिवाला, दुर्गा सहाय सरूर जहानाबादी का मशहूर खिताबी कसीदा चित्तौड़ की अज्मत, तुलसीदास, कबीरदास, अमीर खुसरू और बाबा फरीद के दोहे और हिन्दू अकायद, असातीर और शखसियत व मोकददस मोकामात के बारे में मोजूद उर्दू शायरी पर तफ्सीली तज्जीए पेश किये गये हैं।

तीसरे बाब में अल्लामा इक्बाल की ''तराना–ए–हिन्दी, हिमालय, हिन्दुस्तानी बच्चों का गीत, रवाक–ए–हिन्द, सरूर जहानाबादी की मादर–ए–वतन, ओरूसे हुब्बे वतन, खाके हिन्द, वतन की सरजमीन, खाके वतन, यमुना, गंगा जी, प्रयाग का संगम, सहगल की गंगा पयासी, बदीउज्जमा खावर की गंगा, नजीर अकबराबादी की जाड़े की बहार, बरसात की उमस, बरसात का लुत्फ, बरसात का मौसम, राखी, खुद किताब के लेखक असर अंसारी की नज्म राखी, मसूदा हयात की नज्म राखी वगैरह का तज्केरा शामिल है। मज़्कूरा नज्मों में हिन्दू तहजीब व सकाफत के अनासिर की निशान देही करके उर्दू जबान के हिन्दूस्तानी अरजीयत के रिश्तों और अन्दर तक पैवस्त उन मजबूत जड़ों पर सेयर हासिल बहस की गयी है।

किताब के चौथे और आखिरी बाब में हिन्दुस्तानी मौसम, हिन्दू देव मालाओं और हिन्दुस्तानी तहजीबी रिवायात से वाबिस्ता नजीर अकबरावादी अमानत लखनवी, फाइज देहल्वी, अली जवाद जैदी, कृषण सहगल, जी०आर० कंवल, राज लायल पुरी, उल्फत ऐमनावादी, सआदत यार खान रंगीन मीर तकी मीर, मोहसिन काकोरवी, नशाद औरंगाबादी, गुलाम रब्बानी ताबां, नवबत राय नजर वगैरह शायरों की गीतों, नज्मों और मरसीओं और शेरों, मौजूद हिन्दू तहजीब व अकायद की तर्जुमानी की निशान देही करके उर्दू शायरी में उन की नुमायां हैसियत को पूरी तहकीक के साथ पेश किया गया है। उर्दू शायरी में हिन्दू तहजीब की अक्कासी असर अंसारी की एक अहम तहकीकी किताब है जिस में उर्दू जबान व शायरी की फित्री उदारता को बहुत अच्छे अन्दाज़ में पेश करने की कामयाब कोशिश की गयी है जिसके लिए बहरहाल असर अंसारी काबिले तारीफ हैं।

लेखकगण :

कृपया स्वच्छ, सुन्दर तथा सरल लिखें, पन्ने के केवल एक ओर लिखें।

-सम्पादक

कोल तथा द्राविड़ सभ्यता

ऐतिहासिक पुस्तकों से

इदारा

कौलों का धार्मिक विचार

कोल लोग किसी सर्वशक्तिमान् दयालु भगवान् में विश्वास नहीं करते थे। केवल भूत–प्रेत में विश्वास करते थे और भय के कारण उनकी पूजा किया करते थे। उनका यह विचार था कि यदि प्रेत लोग अप्रसन्न हो जायेंगे तो उन्हे कष्ट पहुंचायेंगे और अगर प्रसन्न रहेंगे तो उनका कल्याण करेंगे। अतएव इन प्रेतों को प्रसन्न रखने के लिए वे उन्हें मोटी रोटी, शहद तथा दूध चढ़ाया करते थे। उन्हें प्रसन्न रखने के लिए यह छोटे–पशुओं तथा पक्षियों की बलि भी दिया करते थे। इन लोगों का विश्वास था कि भूत–प्रेत बड़े–बड़े वृक्षों में निवास करते हैं। अतएव यह लोग वृक्षों की पूजा किया करते थे।

शव विसर्जन : कोल लोग मृतक शरीर को फेंक दिया करते थे जो वायु तथा सूर्य के प्रकाश द्वारा नष्ट हो जाया करता था। कभी–कभी वे शव को पशु–पक्षियों को समर्पित कर देते थे जो उन्हें खा जाया करते थे। यदा–कदा वे शव को गाड़ भी देते थे।

द्रविड़ कौन थे ? – कोलों के साथ–साथ भारतवर्ष में एक दूसरी जाति निवास करती थी जो द्रविड़ कहलाती थीं। यही लोग भारत के अत्यन्त प्राचीन निवासी माने जाते हैं। इनका कद छोटा, सिर बड़ा, नाक छोटी तथा चिपटी और रंग काला होता था। जिस समय आर्य लोग भारतवर्ष में आये उन दिनों द्रविड़ लोग भारत के विभिन्न भागों में निवास करते थे। आर्यों ने उन्हें अनार्य, दस्यु आदि नामों से पुकारा है। आर्यों ने द्रविड़ को उत्तरी भारत से मार भगाया। फलतः द्रविड़ लोग दक्षिण भारत में भाग गये और वहीं पर स्थायी रूप से निवास करने लगे। यहीं पर उनकी सभ्यता तथा संस्कृति का धीरे–धीरे विकास होता रहा है।

द्रविड़ों का आदि देश – द्रविड़ लोग भारत के मूल निवासी थे अथवा अन्य जातियों की भांति यह लोग बाहर से भारत आये थे, इस प्रश्न पर विद्वानों में बड़ा मतभेद है। कुछ विद्वानों के विचार में द्रविड़ लोग दक्षिण भारत के मूल निवासी थे। परन्तु अधिकांश विद्वानों की यह धारणा है कि द्रविड़ लोग बाहर से भारत में आये थे। अब प्रश्न यह उठता है कि ये लोग किस मार्ग से इस देश में आये थे। कुछ विद्वानों का कहना है कि द्रविड़ लोग मंगोल जाति के थे और उत्तर–पूर्व के मार्ग से इस देश में आये थे। कुछ विद्वानों के विचार में हिन्द महा सागर में लेमूरियां नाम का एक महाद्वीप था जो पानी में डूब गया था। इन विद्वानों के विचार में द्रविड़ लोग इसी महाद्वीप के मूल निवासी थे और वहीं से भारतवर्ष में आये थे। अन्य लोगों के विचार में द्रविड़ लोग पश्चिम ऐशिया के आदि निवासी थे और बलूचिस्तान होते हुए उत्तर–पश्चिम के मार्गों से भारत में आये थे। द्रविड़ों का मूल स्थान चाहे जहां हो इतना तो निर्विवाद है कि अन्त में यह लोग भारत में स्थायी रूप से निवास करने लगे और वहीं पर इनकी सभ्यता तथा संस्कृति का विकास हुआ।

द्रविड़ सभ्यता : पहले विद्वानों की यह धारणा थी कि आर्य–सभ्यता ही भारत की सबसे पुरानी सभ्यता है परन्तु अब यह सिद्ध करदिया गया है कि द्रविड़ सभ्यता आर्य–सभ्यता से कहीं अधिक पुरानी है। आर्यों ने द्रविड़ों को दस्यु, दानव, राक्षस आदि नामों से पुकारा है इससे ऐसा लगता है कि द्रविड़ लोग बिल्कुल असभ्य थे। परन्तु वास्तव में ऐसी बात न थी। द्रविड़ लोग सभ्यता की दौड़ में काफी आगे बढ़ गये थे जो निम्नलिखित विवरण से स्पष्ट हो जायगा–

(१) निवास स्थान – द्रविड लोग गांवों तथा नगरों में निवास करते थे। भारतवर्ष में नगरों का निर्माण सबसे पहले द्रविड़ों ने ही किया था : शत्रुओं से इन नगरों की रक्षा करने के लिये वे इनकी किलेबन्दी कर लिया करते थे अतएव नगरीय जीवन तथा नगरीय सभ्यता का आरम्भ द्रविड़ों ने ही किया था।

(२) जीविका के साधन – चूंकि द्रविड़ लोग गांव तथा नगरों दोनों में निवास करते थे अतएव कृषि तथा व्यापार इनकी जीविका के साधन थे। जो द्रविड़ गांवों में रहते थे वे बड़े कुशल किसान होते थे और विभिन्न प्रकार के अन्नों की खेती किया करते

थे। अपने खेतों को सींचने के लिए यह लोग नदियों में बांध बनाते थे। उन पर ये पुल भी बनाते थे जिससे वे उन्हें आसानी से पार कर सकें। कृषि के अतिरिक्त द्रविड़ लोग व्यापार भी करते थे। व्यापार में इन लोगों की बड़ी रूचि थी और शांति पूर्वक वह लोग विदेशों के साथ व्यापार करते थे। यह लोग बड़े चतुर नाविक होते थे और निकट के द्वीपों में इन लोगों ने अपने उपनिवेश स्थगित करने का प्रयत्न किया था।

(३) सामाजिक संगठन – द्रविड़ों का समाज मातृक था और माता ही कुटुम्ब की प्रधान हुआ करती थीं। इन लोगों में चचेरे भाई–बहनों में विवाह हो सकता था। यह प्रथा इन लोगों में अब भी प्रचलित है। जाति–प्रथा का विचार इन लोगों में न था। इनके समाज में केवल ब्राह्मण तथा शूद्र होते थे। क्षत्रिय तथा वैश्य इनके समाज में न थे। अपने मुर्दों को वह लोग गाड़ते थे परन्तु जब यह आर्यों के सम्पर्क में आये तब उन्हें जलाने भी लगे।

(४) धार्मिक जीवन – द्रविड़ों के धार्मिक विचार बड़े ही भद्दे थे। यह लोग पृथ्वी की पूजा किया करते थे। अपने देवी–देवताओं में सबसे अधिक प्रधानता इन लोगों ने माता–देवी को दी थी। शिव–लिंग की पूजा द्रविड़ों में प्रचलित थी। यह लोग पशुओं की भी पूजा किया करते थे। शिव को यह लोग पशुपति कहते थे। संभवतः यह लोग शेषनाग के भी उपासक थे। प्राचीन काल के द्रविड़ प्रेतों की भी पूजा किया करते थे और उन्हें बलि दिया करते थे। पान, फल तथा फूल से पूजा करने की विधि संभवतः द्रविड़ों से ही आरम्भ हुई। अपने देवी–देवताओं की पूजा के लिए लोग मंदिर बनवाया करते थे।

(५) कला–प्रेमी – द्रविड़ों की कला में बड़ी रूचि थी और वे बड़े कुशल कलाकार थे। ईंटों तथा पत्थरों के यह बड़े सुन्दर मकान बनवाया करते थे। सुन्दर–सुन्दर आभूषणों के बनाने में यह लोग बड़े ही चतुर थे। कताई, बुनाई तथा रंगाई के काम में भी यह लोग बड़े कुशल थे। यह लोग मिट्टी के सुन्दर बर्तन बनाते थे। नृत्य तथा संगीत कला में इनकी बड़ी रुचि थी।

(६) राजनीतिक जीवन – द्रविड़ों की राजनीतिक व्यवस्था राजतंत्रात्मक थी अर्थात राज्य का प्रधान राजा होता था। इनका शासन बहुत ही संगठित होता था और बड़ी ही सुचारू रीति से संचालित होता था। संपूर्ण देश कई ज़िलों में विभक्त था और प्रत्येक ज़िले का राजा होता था वह राजा ईंटों तथा पत्थरों के बने हुए सुन्दर भवनों में निवास करते थे। यही भवन किले का भी काम देते थे। युद्ध में यह लोग धनुष–बाण, बर्छा भाला आदि का प्रयोग करते थे। अपनी रक्षा के लिए गांवों तथा नगरों की किलेबन्दी भी यह लोग किया करत थे। सभी काम नियमानुसार होते थे और नियम भंग करने वालों को दण्ड मिलता था।

(७) भाषा तथा लिपि – द्रविड़ों की भाषा ब्राहुई से मिलती जुलती थी। दक्षिण की तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम आदि भाषाएं उसी की शाखाएं हैं। लेखन कला का इन्हे ज्ञान था यह लोग ताड़ के पत्ते पर लिखते थे और बहुत से पत्तों के संग्रह से पुस्तक बन जाती थी।

निष्कर्ष : उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि द्रविड़ों की सभ्यता बड़ी उन्नत दशा में थी। और वे सभ्यता की दौड़ में काफी आगे बढ़े हुए थे। आगे चलकर आर्यों ने बहुत बातें द्रविड़ों से सीखीं और उनकी सभ्यता तथा संस्कृति से प्रभावित हुए। अस्तु, स्मिथ महोदय ने द्रविड़ सभ्यता के अध्ययन पर बल देते हुए लिखा है, "भारतीय इतिहास का सांगोपांग ज्ञान तब तक नहीं प्राप्त हो सकता जब तक दक्षिण भारत की अनार्य संस्थाओं का सही–सही अध्ययन न किया जाय।"

●●●

0522-256005
Asif Bhai Saree Wale
M.A. Saree Bhandar
Manufacturer & Supplier of :
Chickan Sarees & Suit Pieces
In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्न : सूद लेने देने और उस की गवाही देने का क्या हुक्म है?

उत्तर : सूद ख़ोरी बड़ा गुनाह है। इस गुनाह पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अगर तुम सूद लेने से नहीं रूकते तो अल्लाह और उसके रसूल से लड़ाई का एअ़लान सुन लो।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ह़दीस से सूद लेना, सूद देना और उस पर गवाह बनना सब ह़राम साबित है। सूद ख़ोर को सख़्त तरीन सज़ा मिलेगी।

प्रश्न : ह़लाल जानवर ज़ब्ह करने के बाद क्या उसके अन्दर बाज़ ऐसी चीज़ें हैं जिनको खाने से रोका गया है ?

उत्तर : यह तो सभी जानते हैं कि ज़ब्ह के बाद अभी उसके अन्दर उसका पाख़ाना पेशाब है वह साफ़ किया जाएगा उसके बाद भी उसकी सात चीज़ें खाना ह़राम हैं। बहाया हुआ ख़ून, ह़राम मग़्ज़ (रीढ़ की हड्डी का गूदा) पित्ता (पित की थैली), ज़कर (नर की पेशाब की नली) फ़र्ज (मादा के पेशब का मक़ाम), ग़ुदूद (ग्रन्थि) उन्सयैन (दोनों अण्डकोश) इन्हें खुस्यतैन भी कहते हैं।

प्रश्न : ज़बीह़ा किन लोगों का खाना चाहिए ?

उत्तर : जबीह़ा नेक लोगों का खाना चाहिए अच्छा यही है लेकिन फ़ासिक़ व फ़ाजिर मुसलमान का जबीह़ा भी ह़लाल है।

प्रश्न : ज़ब्ह करने वाला अगर ज़ब्ह करते वक़्त बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कहना भूल जाए तो क्या हुक्म है?

उत्तर : अगर ज़ब्ह करने वाले ने इरादा कर रखा था कि जब्ह करते वक़्त बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर पढ़ूंगा ज़ब्ह करते वक़्त भूल गया और बे पढ़े ज़ब्ह कर दिया तो भी ज़बीह़ा ह़लाल है अल्बत्ता अगर जान बूझ कर बिस्मिल्ला अल्लाहु अकबर पढ़ना छोड़ता है तो ज़बीह़ा ह़राम हो जाएगा और नजिस भी।

प्रश्न : रेलों पर जो खाना मिलता है उसका क्या हुक्म है?

उत्तर : अगर रेल में सिर्फ़ सब्ज़ी का (शाकाहारी) खाना है तो इस सूरत में तो रेल का खाना बिल्कुल जाएज़ है और अगर रेल के खाने में गोश्त भी मिलता है तो मालूम किया जाए कि वह मुसलमान का ज़बीह़ा है या नहीं अगर यक़ीन से मालूम हो जाए कि मुसलमान के जबीहे ही का गोश्त होता है तो भी खाया जा सकता है। इसके साथ अगर डाइनिंग कार में मुसलमान भी हों तो बिना हिचकिचाहट के खाना चाहिए लेकिन अगर मालूम हो कि गोश्त झटके का है या मालूम न हो सके कि मुसलमान का ज़बीह़ा है या नहीं तो इन दोनों सूरतों में एक मुसलमान को रेल का खाना न खाना चाहिए। ऐसे डाइनिंग कार से जिस में ह़राम गोश्त पकता हो वहां से शाकाहारी खाना खाना भी दुरूस्त नहीं। चाहे खिलाने वाले मुसलमान हों।

प्रश्न : किसी जानवर को दवा वगैरह बनाने के लिए जिन्दा जलाना कैसा है?

उत्तर : किसी इन्सान के लिए किसी जानवर को जिन्दा जलाना जाइज नहीं बाज लोग कंठ माला का मरहम बनाने के लिए छिपकली खौलते तेल में डाल देते हैं यह नाजाइज़ है छिपकली मार कर तेल में डालें या ठंडे तेल में छिपकली डाल दें मर जाएगी फिर तेल में पकाएं। बहर हाल किसी भी जानवर को दवा के लिए जलाना जरूरी हो तो पहले उस मार दें फिर जलाएं। मारने में भी ऐसी तरकीब करें कि कम से कम तक्लीफ पहुंचे।

प्रश्न : बन्सी के कांटे में जिन्दा केंचवा पिरोना कैसा है?

उत्तर : नाजाइज है पहले उस को मार लें फिर कांटे में पिरोए।

प्रश्न : क्या ह़राम जानवर जब्ह करने से पाक हो जाता है?

उत्तर : हां सुअर के सिवा हर जानवर जब्ह करने से पाक हो जाता है। अब अगर ह़लाल है तो खाया जाएगा और हराम जानवर था तो खा नहीं सकते। मगर ख़ारजी तौर पर काम में ला सकते हैं जैसे उसकी चर्बी वगैरा ज़रूरत हो तो मालिश कर के बे धोए नमाज़ पढ़ सकते हैं।

प्रश्न : क्या पानी के जानवर सब पाक हैं?

उत्तर : हां पानी के सभी जानवर छोटे हों या बड़े पाक हैं उनकी कोई चीज जिस्म में लगी हो तो धोए बिना नमाज पढ़ सकते हैं अलबत्ता सब को खा नहीं सकते अहनाफ के नजदीक पानी के जानवरों में सिर्फ मछली खाई

(शेष पृष्ठ २७ पर)

उम्मुल मोमिनीन

हज़रत मैमूना (रज़ि०)

सादिका तस्नीम फारूकी

इनका नाम मैमूना था, यह कबील–ए–कुरैश से हैं, इनका नसब इस तरह है, मैमूना बिन्ते हारिस बिन हज्म इब्ने बजीर बिन हज्म बिन रौबः बिन अब्दुल्लाह बिन बिलाल बिन आमिर बिन सअ़ सअ़ बिन मअ़वि बिन बक्र बिन हवाजिन बिन मंसूर बिन इकरमहः बिन खसीफ बिन कैस बिन ऐलान बिन मिज़ मां कबील–ए–हुमैर से थीं इनका नाम व नसब इस तरह है –

हिन्द बिन्ते औफ बिन जहीर बिन हारिस बिन हयातक : बिन जर्श।

पहले मसऊद बिन अम्र बिन उमैर सकफी से निकाह हुआ। (जरकानी पेज २८८ भाग २) लेकिन किसी वजह से अलग होना पड़ा, फिर अबू रहम बिन अब्दुल अज्जा के निकाह में आयीं, अबू रहम का सन् ७ हि० में इन्तिकाल हुआ तो लोगों ने हजरत मुहम्मद (सल्ल०) से निकाह करने की कोशिश की।

हजरत मुहम्मद (सल्ल०) जीकादह सन् ७ हि० एहराम की हालत में हजरत मैमूना (रज़ि०) से निकाह हुआ। (बुखारी पेज ६११ भाग २)

हजरत अब्बास (रज़ि०) निकाह के मुतवल्ली हुए थे, (नसई पेज ५१३)

आं हजरत (सल्ल०) उमरः करने के बाद जब मदीना वापस हुए तो सर्फ में जो मदीना के रास्ते पर मक्का से दस मील है।

वहां रूके, अबू राफेअ (आंहजरत सल्ल० के गुलाम) हजरत मैमूना (रज़ि०) को लेकर सर्फ पहुंचे और यहीं रस्म पूरी हुई, (इब्ने सअ़द पेज ८१ भाग २)

यह आंहजरत (सल्ल०) का आखिरी निकाह था। (तबरी भाग १३ पेज २४५३)

और हजरत मैमूना आखरी पत्नी थीं।

यह अजीब इत्तिफाक है कि मकामे सर्फ में उनका निकाह हुआ था और सर्फ ही में उन्होंने इन्तिकाल भी किया। हजरत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने जनाजः की नमाज पढ़ाई और कब्र में उतारा, जब उनका जनाजः उठाया गया तो हजरत इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा, 'यह रसूल (सल्ल०) की पत्नी हैं, जनाजः को ज्यादा हरकत न दो, अदब के साथ धीरे ले चलो।'' (बुखारी भाग २ पेज ७५८)

इन्तिकाल होने वाले साल के सम्बन्ध में इख्तिलाफ है, लेकिन सही यह है कि उनका सन् ५१ हिजरी में इन्तिकाल हुआ।

हजरत मैमूना से (४६) हदीसें मरवी है जिनमें बाज से उनकी फेकःदानी का पता चलता है।

एक बार हजरत इब्ने अब्बास रज़ि अस्त व्यस्त हुए तो कहा बेटा ! इसका क्या सबब है? जवाब दिया, उम्मे अम्मारः मेरे कंघा करती थीं और (आज कल उनके अय्याम का जमना है) बोलीं क्या आंहजरत (सल्ल०) हमारी गोद में सर रख कर लेटते थे और कुर्आन पढ़ते थे और हम इसी हालत में होते थे, इसी तरह हम चटाई उठा कर मस्जिद में रख आते थे, बेटा कहीं यह हाथ में भी होता है। (मुसनद भाग १६ पेज ३३१)

हजरत मैमूना (रज़ि०) से जिन बुजुर्गों ने रिवायत की है उनके नाम यह हैं :

हजरत इब्ने अब्बास (रज़ि०), अब्दुल्लाह बिन शद्दाद बिन अलहाद, अब्दुरर्हमान बिन अस्सायब यजीद बिन असम (यह सब उनके भांजे थे) उबैदउल्लाह खोलानी (रबीब) थे मजबः (नौकरानी थीं) अताए बिन यसार, सुलैमान बिन यसार (गुलाम थे) इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह बिन मअबद बिन अब्बास, कुरैब (इब्ने अब्बास के गुलाम) उबैदह बिन सबाक, उबैद उल्लाह बिन अब्दुल्लहा बिन उत्बः मालिया बिन्त सबीअ़।

(इसाबः भाग ८ पेज १६२ बहवाला इब्ने सअ़द)

मैमूना (रज़ि०) अल्लाह से बहुत डरती और सिल–ए–रहिमी करती थीं।

हर काम में नबी (सल्ल०) का बहुत खयाल करती थीं, एक बार उनकी नौकरानी बदया इब्ने अब्बास (रज़ि०) के घर गयी तो देखा कि पति पत्नी के बिछौने दूर–दूर बिछे हैं, ख्याल हुआ कि शायद कुछ लड़ाई हो गयी

है, लेकिन पूछने से मालूम हुआ कि इब्ने अब्बास (रज़ि०) (पत्नी के माहवारी के जमाने में) अपना बिस्तर उनसे अलग कर लेते हैं, आकर हजरत मैमूना (रज़ि०) से बयान कियातो बोलीं, उनसे जाकर कहो कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के तरीके से इस कदर क्यों मुंह मोड़ती है? आप बराबर हम लोगों के बिछौनों पर आराम फरमाते थे। (मुसनद भाग ६ पेज ३३२)

एक औरत बीमार पड़ी तो उसने मन्नत मानी थी कि ठीक होने पर बैतुल मुकद्दस जा कर नमाज पढ़ेगी, अल्लाह की शान वह अच्छी हो गयी और सफर की तैयारियां शुरू कीं जब विदा होने के लिए मैमूना (रज़ि०) के पास आयीं तो बोलीं तुम यहीं रहो और मस्जिद नबवी में नमाज पढ़ लो क्योंकि यहां नमाज पढ़ने का सवाब दूसरी मस्जिदों के सवाब से पचास हजार गुना जियादा है। (मुसनद भाग ६ पेज ३३३)

हजरत मैमूना (रज़ि०) को गुलाम आजाद करने का शौक था, एक लौंडी को आजाद किया तो आंहजरत (सल्ल०) ने फरमाया कि (अल्लाह तुमको इसका बदला दे) (मुसनद भाग ६ पेज ३३२)

हजरत मैमूना (रज़ि०) कभी–कभी कर्ज लेती थीं, एक बार ज़ियादा रकम कर्ज ली तो किसी ने कहा कि आप इसको किस तरह अदा करेंगी? फरमाया, आंहजरत (सल्ल०) का इरशाद है कि जो व्यक्ति अदा करने की नियत रखता है अल्लाह खुद उसका कर्ज अदा कर देता है। (मुसनद भाग ६ पेज ३३२)

(पृष्ठ ३६ का शेष)

किस्सारवानी बाजार में सीनों पर गोलियां खा कर शहीद हो गए। परन्तु अहिंसा का दामन नहीं छोड़ा। १९१४ ई. में मौलाना अबुल कलाम आजाद मौलाना हसरत मोहानी, मौलाना जफर अली खां के साथ साढ़े चार हजार लोगों को जेल भेजा गया।

असहयोग आन्दोलन के शहीद खान अशफाकुल्लाह खां काकोरी, गाजी हबीबनूर पेशावरी, गाजी अब्दुर्रशीद पेशावरी का खून आजादी की कुर्बानगाह पर बहाया गया।

क्या स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास इन बहादुरों की कुर्बानियों के वर्णन के बिना कभी पूरा हो सकेगा। आज जिस तरह मुसलमानों की कुर्बानियों को नजर अन्दाज किया जा रहा है और शिक्षा, इतिहास और राजनीति के गलयारों से निकाला जा रहा है, इसका नतीजा देश की अखण्डता, एकता और देशकी गंगा जमनी सभ्यता के लिए बड़ा घातक सिद्ध होगा।

आज आवश्यकता है कि स्कूलों, मदरसों, कालिजों, दारूलउलूमों, यूनीवर्सिटयों में इन शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों के कारनामों को अपनी नई नसल के सामने बयान किए जाए और तरगीब (प्रेरणा) दी जाए कि वे उनकी जीवनी और उनके कारनामों का अध्ययन कर अपने अन्दर आजादी की ज्योति जलाए रखें तथा देश की रक्षा के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने के लिए तत्पर रहें।

हमारे दीनी मदरसों का यह कर्तव्य है कि वह अपने इन फरजन्दाने कौम के हालाते जिन्दगी से नई नस्ल को अवगत कराएं।

अपने प्यारे नबी की इताअत करो

हैदर अली नदवी

एक अल्लाह की बस इबादत करो
अपने प्यारे नबी की इताअत करो
आंच आने न देना कभी दीन पर
मिल के दीने मुबीं की हिफाजत करो
रहबरी को है तरसे ये सारा जहां
मोमिनों तुम जहां की कियादत करो
लड़के आपस में बुज्दिल न होना कभी
दूर अपने दिलों से अदावत करो
तुमको चैलेंज कोई न कर पाएगा
शर्त यह है सहाबा से उल्फत करो
बिगड़े हालात फिर ये संवर जाएंगे
अब न लिल्लाह कोई शरारत करो
जालिमों की जड़ें खुद ही कट जाएंगी
हक परस्तों की लोगों हिमायत करो
मग्फिरत रब तुम्हारी भी फरमाएगा
तुम मरीजों की जाकर अ़ियादत करो
आफतें और बलाएं न आ पाएंगी
रोज अपने घरों में तिलावत करो
शिद्दते मर्ज में मुस्तफा ने कहा
ऐ अबू बक्र जाकर इमामत करो
चाहते हो अगर अद्ल बाकी रहे
तुम उमर जेसी काइम अदालत करो
मिल गया है लकब उनको नूरैन का
मोमिनो तुम गनी से महब्बत करो
आज के खैबरी फिर दहल जाएंगे
पेश तुम मुर्तजा सी शजाअत करो
दिल दुखाना किसी का भी जाइज नहीं
तुम न हैदर किसी की इहानत करो

स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों की भूमिका

हबीबुल्लाह आजमी

देश के बटवारे के बाद मुसलमानों का सबसे बड़ा नुकसान हुआ कि उनके जंगे आजादी का इतिहास गुमनामी के अंधेरे में खो गया। वह लोग जो ज़बान से दो कौमी सिद्धान्त को नकारते थे उन्होंने अमली तौर पर इस सिद्धान्त पर अपने विश्वास को प्रमाणित कर दिया, हालांकि वह राजनेता। जो एक राष्ट्र पर पूरा विश्वास रखते थे उन्होंने मुल्क के बटवारे के बाद भी भारत को एक राष्ट्र बनाने की अपनी कोशिश जारी रखी और देश को ऐसा संविधान (दस्तूर) दिया जो देश में बसने वाले सभी समुदायों को जोड़ कर एक राष्ट्र (एक कौम) बनाने के लिए सक्षम है। परन्तु वह लोग जो अपनी अक्सरियत के बल पर इस देश को एक धर्म से जोड़कर इस की गंगा जमनी सभ्यता को मटियामेट कर देना चाहते थे, उनका बोल बाला हो गया।

वह राजनीतिक पार्टी जिसने अपने वर्षों के संघर्ष से इस देश को आजाद कराया वह भी इस हमले से बच न सकी और इस साम्प्रदायिकता का शिकार हो गई और अपने बुद्धिजीवी तथा शीर्ष नेताओं के बनाए हुए संविधान की अनदेखी करके शासन की नीतियों को ऐसा रूप दिया कि हिन्दू मुसलमानों के बीच दूरियां बढ़ती गईं। इतिहास के पाठ्यक्रम को ऐसा रूप दिया कि न केवल तथ्यों को तोडमरोड़ कर पेश किया बल्कि मुसलमानों ने जो महान कुर्बानियां देश की आजादी दिलाने में दीं उनको एक सिरे से इतिहास के पन्नों से ओझल कर दिया।

आज यदि आप किसी विद्यार्थी से दस मुस्लिम मुजाहिदे आज़ादी (स्वतंत्रता सेनानी) का नाम बताने के लिए कहिये तो वह दो चार नामों के आगे नहीं बताएगा राजनेताओं का भी यही हाल है। हालांकि इतिहास साक्षी है कि आज़ादी का सपना सबसे पहले मुसलमान उलमा ने देखा और अंग्रेजों को इस देश से निकालने की जद्दोजिहद (संघर्ष) शुरू की। नीचे उन मुस्लिम महापुरूषों का वर्णन किया जाता है जिन्हों ने जंग आज़ादी में बढ़चढ़कर भाग लिया और कुबानियां पेश कीं।

शाह वलीउल्लाह के मदरसे के विद्यर्थी शाह अब्दुल अजीज, शाह रफीउद्दीन, नवाब सिराजुद्दौला (बंगाल) शेरे मैसूर टीपू सुलतान की जद्दोजिहद आजादी को क्या भुलाया जा सकता है।

१८५७ के शहीदों में नवाब मुस्तफा खां शेफता, नवाब मज़हरूद्दौला, नवाब अकबर खां बंगश, नवाब अमीर खां शहीद नवाब अहमद खां मदरासी, मौलाना इमाम बख्श सहबाई आदि शहीदों के गर्म खून के धब्बों को मिटाया जा सकता है जो लखनऊ, दिल्ली, कानुपर, पटना की सरजमीन पर बहाया गया ?

१८५७ के इस प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में पांच लाख मुसलमानों को सजाए मौत दी गई, बहादुरशाह ज़फ़र के चारों बेटों को क़त्ल कर उनके सरों को तुहफे के रूप में उनके सामने पेश किया गया तो उन्होंने बड़े गर्व से कहा –मुगल शाहज़ादे इसी प्रकार सुर्खरू होकर अपने बाप के सामने आते हैं। क्या हम शहंशाह बहादुर शाह जफर की जलावतनी (देशनिकाला) भूल जाएंगे?

इस जंगे आज़ादी में मुस्लिम महिलाओं ने भी अपने कारनामे दिखाएं हैं और वह जिहाद में पीछे नहीं रहीं। बादशाह बेगम ज़ीनत महल, नवाब बेगम हजरत महल आदि सैकड़ों, या तो जंग में लड़ती हुई शहीद हो गईं या जलावतन होकर खत्म हो गईं।

हजरत मुजद्दिदे आलिफ सानी (रह०) ने जो सपना १५८५ ई० में देखा था उसको पूरा करने के लिए मौलाना हबीबुर्रहमान लुध्यानवी, मौलाना अजीज गिल (सरहद) मौलाना अनवर शाह काशमीरी, मौलाना अबुल कलाम आजाद, हकीम अजमल खां (दिल्ली), मौलाना मुहम्मद अली जौहर (यूपी), मौलाना अताउल्लाह शाह बुखारी, मौलाना महमूदुल हसन, मौलाना हुसैन अहमद मदनी, मौलाना अब्दुर्रहीम राय पूरी, मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी, मौलाना हबीबुर्रहमान (देवबन्द) ने क्या कुछ कुर्बानियां नहीं दीं। १८६० में मौलवी अमीरूद्दीन को उम्र कैद की सजा देकर उनकी जाएदाद जब्त की गई। चालीस लाख खुदाई खिदमतगार खान अब्दुल गफ्फार खां की रहनुमाई में

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

असली और नकली नोटों की पहचान

हबीबुल्लाह आजमी

नकली सिक्कों को ढालने और नकली नोट छापने का कारोबार बहुत पुराना है। कुछ लोग इस कारोबार में अपने ज़ाती लाभ के लिए लगे हुए हैं तो कुछ लोग किसी अन्य देश के इशारे पर किसी देश की अर्थ व्यवस्था को बिगाड़ने के लिए नकली नोटों को बाजार में बड़ी मात्रा में शामिल करने की प्रक्रिया में व्यस्त हैं। वास्तव में दुश्मन देश केवल मैदानेजंग में ही नहीं लड़ते बल्कि देंश की माली हालत को तहसनहस करने के लिए नकली नोट को देश में इतनी संख्या में दाखिल करने की कोशिश करते हैं कि देश की अर्थ व्यवसथा चरमरा जाए।

आज कल समाचार पत्र इन खबरों से भरा पड़ा है कि फुलां जगह नकली करेंसी भारी मात्रा में पकड़ी गई। अक्सर यह करेंसी पांच सौ या हजार के नोटों की शक्ल में पकड़ी जाती है। कोई शहरी गलती से ऐसा नोट ले लेता है तो वह जब बैंक में जमा करने या भुनाने जाता है तो उसे मालूम होता है कि उसका यह नोट नकली है। फिर यहीं से वह परेशानी में फंसता है। बैंक जब उस की रपट पुलिस थाने में करती है तो उस से पूछताछ और उस पर कानूनी शिकंजा कसना शुरू हो जाता है। वह लाख दुहाई दे कि उसे यह नोट खरीद फरोख्त में मिला है मगर पुलिस उसके द्वारा उस तह तक पहंचना चाहती है जहां इस धंधे का स्रोत है। आम आदमी जब बिना किसी जुर्म के इस मुसीबत में फंस जाता है तो उसकी जिन्दगी अजीरन हो जाती है। इसलिए आम आदमी के लिए यह जानना जरूरी है कि असली और नकली नोट में क्या अन्तर है।

जानकारों के अनुसार एक हजार के नोट में पड़े सुरक्षा धागे में चार रंग दिखाई पड़ते हैं, गुलाबी, हरा, नीला और लाल। यह रंग केवल एक हजार के नोट में ही होते हैं। किसी दूसरे नोट में इस प्रकार के रंग नहीं होते। पांच सौ के नोटों में बायीं तरफ हरे रंग का भाग होता है। उस में पांच सौ का अंक स्पष्ट दिखाई देता है अगर पांच सौ का अंक स्पष्ट दिखाई न दे या धुन्धला दिखाई दे तो यह नोट नकली होगा। बाजार में अधिकांश पांच सौ के नोट नकली होते हैं। इसलिए जब भी पांच सौ के नोट का लेनदेन करें तो उस पर खास ध्यान दें। असली पांच सौ नोट की पहचान यह है कि उसमें जो सुरक्षा धागा होता है उसमें आरबीआई इण्डिया लिखा होता है। नकली नोट में ऐसा नहीं होता । नकली नोट का कागज असली नोट के कागज से जियादा मोटा होता हे। हाथ में आते ही पता चल जाता है कि यह नोट असली है या नकली। पांच सौ के नकली नोट में महात्मागांधी का चित्र धुंधला होता है। इन सावधानियों के बावजूद आप को अगर नकली नोट मिल जाएं तो आप उसे बाजार में न चलाएं। यह एक अपराध है। इस सिलसिले में आप बैंक की सहायता लें बैंक अधिकारी इस समस्या को कानूनी ढंग से हल करने का रास्ता बताएंगे।

धूम्रपान छोड़ने के फाइदे

अगर आज से और अभी से धूम्रपान छोड़ दें तो –

धूम्रपान छोड़ने के २० मिनट बाद से ही आपके शरीर की अन्दरूनी मरम्मत शुरू हो जाती है। ब्लड प्रेशर और पल्स रेट यानी नाड़ियों की गति सामान्य होने लगती है।

८ घण्टे के बाद आपके रक्त में मिल चुके विषैले तत्व निकोटिन और कार्बन मोना आक्साइड का स्तर घटकर आधा हो जाता है, और इस तरह रक्त में आकसीजन का प्रवाह सामान्य होने लगता है।

२४ घंटे बाद आपके शरीर में कार्बन मोनोआक्साइड खत्म होने लगता है। आपके फेफड़े धूम्रपान की देन बलगम और अन्य विषैले तत्वों के खिलाफ सफाई अभियान का कार्य शुरू कर देते हैं।

४८ घण्टे बाद आपके शरीर में निकोटिन का पूरी तरह सफाया हो चुका होगा। आपकी स्वाद और सूंघने की इन्द्रियां फिर से पूरी तरह सक्रिय हो उठेंगी।

७२ घण्टे बाद आप आसानी से सांस लेने लगेंगे और अपने अन्दर एक अजीब सी शक्ति और स्फूर्ति का संचार होता महसूस करेंगे।

२ से १२ सप्ताह के बीच आपका रक्त प्रवाह बिल्कुल सुचारू रूप से होने लगेगा।

३ से ९ महीने के भीतर आपकी खांसी और श्वसन क्रिया से सम्बन्धी सारी परेशानियां जाती रहेंगे और आपके फेफड़ों की क्रियाशीलता भी १० फीसदी बढ़ चुकी होगी।

५ वर्षों बाद आपके दिल के दौरे के शिकार होने का खतरा उन लोगों के बनिस्बत आधा हो जायेगा जो धूम्रपान करना नहीं छोड़ते।

गीमे आज़ादी (स्वतंत्रता दिवस) पर गीत

ज़िन्दा दिल

दिन है यह आज़ादी का
भारत की जांबाज़ी का
खुशी मनाओ खुशी मनाओ
खोलो कूदो मजे उड़ाओ
बून्दी लो भर दोना खाओ
उछलो कूदो और यह गाओ
हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद
देश महान ज़िन्दाबाद
दिन है यह आज़ादी का
भारत की जांबाज़ी का
दिन में निकलो खेलन को
रात में कवि सम्मेलन हो
कहो कहानी हंसी भरी
मानवता पर रहे खरी
हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद
देश महान ज़िन्दाबाद
दिन है यह आज़ादी का
भारत की जांबाज़ी का
जिस से खुश है भाई उसका
बेशक वह है मानव सच्चा
भला जो चाहे मानव का
उसी ने पाई मानवता
हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद
देश महान ज़िन्दाबाद
दिन है यह आज़ादी का
भारत की जांबाज़ी का
प्रेम देश से बचन हमारा
करे तरक्की देश हमारा
इल्मो हुनर से प्यार है हमको
इल्म सिखायेंगे हम सब को
हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद
देश महान ज़िन्दाबाद

दिन है यह आज़ादी का
भारत की जांबाज़ी का
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
आपस में सब मुल्की भाई
शत्रु करे जो कभू चढ़ाई
मिल कर हम सब करें लड़ाई
हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद
देश महान ज़िन्दाबाद
दिन है यह आज़ादी का
भारत की जांबाज़ी का
सात समुन्दर पार के गोरे
यां आकर हाकिम बन बैठे
उनसे लड़ कर ली आजादी
आजादी की धूम मचा दी
हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद
देश महान ज़िन्दाबाद
दिन है यह आज़ादी का
भारत की जांबाज़ी का
धोखा दे व्यापारी आये
तीन सदी तक हम पर छाये
सुन लो भय्या भारत वालो
अब तो तुम धोखा न खाओ
हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद
देश महान ज़िन्दाबाद
दिन है यह आज़ादी का
भारत की जांबाज़ी का
कदम बढ़ाओ आगे आओ
जालिम को पहले समझाओ
जालिम को गर समझ न आये
धक्का दे दो पीछे जाये
हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद
देश महान ज़िन्दाबाद

दिन है यह आज़ादी का
भारत की जांबाज़ी का
देश की रक्षा करेंगे हम सब
देश में उन्नति करेंगे हम सब
कदम जमा कर कहेंगे हम सब
कदम बढ़ा कर कहेंगे हम सब
हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद
देश महान ज़िन्दाबाद
दिन है यह आज़ादी का
भारत की जांबाज़ी का
कपड़ा पहनो देश का अपने
साबुन रगड़ो देश का अपने
इत्र लगाओ देश का अपने
कोल्ड पियो तुम देश का अपने
माल स्वदेशी ज़िन्दाबाद
हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद
दिन है यह आज़ादी का
भारत की जांबाज़ी का
उर्दू हमारी मातृ भाषा
हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा
उर्दू छाती हिन्दी माथा
यह है उर्दू हिन्दी गाथा
हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद
देश महान ज़िन्दबाद
दिन है यह आज़ादी का
भारत की जांबाज़ी का
एकेश्वर के हम हैं पुजारी
उसी को पूजे दुन्या सारी
आग में हम जल सकते हैं
शिर्क नहीं कर सकते हैं
हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद
देश महान ज़िन्दाबाद

इन्तिहाई गम इन्तिहाई खुशी, इन्तिहाई ग़म

लगभग दस दस वर्ष के तीन बच्चे गांव के करीब एक बाग में खेल रहे थे। एक जामुन के पेड़ की एक शाखा में एक बड़ा सा गोल सूराख दिखाई पड़ रहा था। एक बच्चे की नजर उसके करीब बैठे एक तोते पर पड़ी। उसने अपने साथियों को तोता दिखाते हुए कहा कि इस सूराख में जरूर तोते के बच्चे होंगे। बच्चे निकाले जाएं। तोते के बच्चे जरूर थे मगर पास के दूसरे सूराख में जो पत्तियों की आड़ में था। एक बच्चा दरख्त पर चढ़ने और बच्चे निकालने के लिए तैयार हो गया। दूसरे बच्चों ने मदद की और उसे दरख्त पर चढ़ा दिया। बच्चा उस सूराख तक पहुंच गया जिसे नीचे से देखा था और उस में हाथ डाल दिया मगर यह क्या हुआ? सूराख का मुंह चौड़ा था एक किनारे बच्चे का हाथ और दूसरे किनारे से कोबरा सांप का फन बाहर आ कर बच्चे को घूरने लगा। बच्चा बिल्कुल गुम सुम, सांप और बच्चा एक दूसरे को देख रहे हैं। नीचे से बच्चों ने यह मंजर देखा तो चीख निकल गई। बच्चे घर भागे और जो बच्चा दरख्त पर था उसके घर खबर की। आनन फानन एक भीड़ दरख्त के नीचे पहुंच गई। इक्लौते बच्चे के वालिदैन का बुरा हाल था सब लोग सर ऊपर उठाए इस हैरत नाक मंजर को देख रहे थे किसी के कुछ समझ में न आ रहा था कि क्या किया जाए। एक बन्दूक वाले भी अपनी बन्दूक के साथ पहुंच गये थे। वह बोले कि मैं एलजी से सांप की गरदन उड़ा कर बच्चे को बचा सकता हूं इस शर्त पर कि बच्चे के घर वाले लिख कर दें कि अगर निशाना बहक जाए और बच्चे को नुकसान पहुंच जाए तो मुझे मुआफ किया जाए। वालिद ने रो कर कहा हम मुआफी का एलान करते हैं। लोगों ने कहा हम गवाह हैं लिखा पढ़ी में देर न लगाओ तुरन्त काम करो। बन्दूक वाले ने निशाना लेकर फाइर कर दिया, सांप का फन एक बालिश्त धड़ के साथ दूर जा गिरा। बच्चा जल्दी से उतारा गया वालिदैन ने चिम्टा लिया। अब लोग सांप के फन को ढूंढने लगे। बड़ी बड़ी घास में गिरा था। कहीं दिखाई न दे रहा था। बच्चा बोला मैं ने गिरते देखा है, मैं बताता हूं और फौरन फन के पास पहुंच गया। अपनी उंगली बिल्कुल उस के मुंह के पास ले जाकर उसे छूते हुए बोला यह है। फन कुछ धड़ के साथ था और जिन्दा था आंखें भी खुली थीं चप से उंगली पकड़ कर लटक गया। बच्चे ने जोर से हाथ झटका फन तो दूर जा गिरा लेकिन दान्त लग चुके थे और जहर (विष) अन्दर उतर चुका था। कोबरा का जहर बच्चे को लेकर घर भागे। घर पहुंचते पहुंचते बच्चा बेहोश था। कोई झाड़ फूंक वालों के पास पहुंचा तो कोई झोला छाप डाक्टरों के पास मगर बच्चा फिर होश में न आ सका कैसा मंजर था। थोड़ी ही देर में इन्तिहाई गम, इन्तिहाई खुशी, फिर ज़िन्दगी भर का गम। सच है दुन्या धोखे की टट्टी है। इस पर भरोसा करना बेवकूफी है।

जल्दी न करो

एक अमीरज़ादा शिकार को निकला तीर कमान और तलवार उस के हथियार थे। घोड़े पर सवार हुआ, शिक्रा (बाज़) भी साथ था। दो चार साथी भी थे। किसी शिकार के पीछा करने में साथी बिछुड़ गये। पहाड़ी व जंगली इलाका था। दोपहर का वक्त था। प्यास तेज हो गई। प्याला साथ था, मगर पानी न था। उस ने देखा कि एक पत्थर से बून्द बून्द पानी टपक रहा है। प्याला रख दिया। थोड़ी देर में साफ पानी से प्याला भर गया। इस दर्मियान बाज़ ने एक परवाज लगाई और वापस आ गया। अमीर जादे ने प्याला उठाया और पीने के लिये मुंह की तरफ बढ़ाया। इतने में बाज उड़ा और अपने पर फड़फड़ा कर प्यालां गिरा दिया अमीर जादे को बड़ा ही गुस्सा आया तलवार उठाई और वफादार बाज के दो टुकड़े कर दिये। अब अमीर जादे ने पानी का पीछा किया कि यह कहां से रिस रहा है। कुछ दूर जाकर एक पहाड़ी पर उसने एक मुर्दा अजगर देखा यह पानी उसी के सड़े बदन से रिस कर वहां तक पहुंचा था और बूंद बूंद रिस रहा था। अब अमीर जादे को बहुत ही दुख हुआ।

(पृष्ठ ५ का शेष)

वह जरूर दोजख में डाला जाएगा। (हुमजा:२,३,४)

आदमी को समझना चाहिए कि दौलत हमारा अस्ली मकसद नहीं है अस्ली गरज तो यह है कि खुदा की दी हुई दौलत को नेक कामों में खर्च करके खुदा की खुशी हासिल करे। दौलत का शुक्र यही है कि उसके जरीअे से दीन और दुन्या की काम्याबी हासिल की जाए।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आज़मी

● जर्मनी ने इस्लामी तालीम को पाठ्यक्रम में जगह दी

जर्मनी के प्रान्त बेडिन विग्रेज के अधिकारियों ने प्रान्तीय स्कूलों में इस्लामी तालीम को पाठ्यक्रम में शामिल करने की अनुमति दे दी। यह अनुमति मुस्लिम संगठनों की मांग पर दी गई। इसी बीच जर्मनी के एक और प्रान्त के अधिकारियों ने इस्लामी तालीम को तजरबाती तौर पर पाठ्यक्रम में शामिल करने का एलान किया। बेडिन विग्रेज में एक इस्लामी संगठन के नेता अली जमीर ने जर्मन समाचार पत्र फ्रैंक फर्ट न्यू प्रेस से बातचीत करते हुए कहा कि प्रान्त के अधिकारियों ने स्कूल में इस्लामी शस्त्र पढ़ाने की अनुमति दी है। उन्होंने कहा इस्लामी शिक्षा जर्मन भाषा में दी जाएगी।

● इराक में अमेरिकीयों की कायरता :

अमेरिकी फौजी ड्यूटी देने से इन्कार करने लगे हैं पिछले वर्ष अमेरिकी कमाण्डर क्यून बन्दरमिन की कमान में एक फौजी यूनिट को इराक जाने का आदेश हुआ तो दो फौजियों ने आत्महत्या का प्रयास करते हुए अपने ऊपर फायर खोल दिया जबकि एक और फौजी ने अपने साथी से अनुरोध किया कि वह उसे गोली मार दे। इसके अतिरिक्त दोबारा इराक जाने के भय से १७ फौजी कैडेट फरार हो गए। पश्चिमी टीकाकारों ने सम्भावना प्रकट की है कि वेटनाम युद्ध की तरह इराक में भी अमेरिकी फौजियों के फरार होने की सख्या में इजाफा होता जा रहा है और इस बात का खतरा मौजूद है कि फौजी फरार होकर विरोधियों के साथ मिल भी सकते हैं। स्पष्ट है कि उपरोक्त यूनिट के कमाण्डर क्यून बिण्डर मिन की ड्यूटी से इनकार पर सात साल की कैद की सजा सुनाई गई।

● कोरियाई भाषा में कुर्आन प्रकाशित :

कोरियाई भाषा में कुर्आन पाक के दस पारों का अनुवाद पूरा करके प्रकाशित कर दिया गया है। कोरियाई मुस्लिम नौजवानों के संगठन इण्टरनेशनल सोसाइटी फार मुस्लिम यूथ अलवहबी ने एक प्रेस कान्फ्रेंस को सम्बोधित करते हुए कहा कि उलमा ने कुर्आन मजीद का अनुवाद कोरियाई भाषा में किया है और इसको विशेष ध्यान पूर्वक सही किया गया है। उन्होंने कहा हमारी योजना दस हजार प्रतियां प्रकाशित करने की हैं। इन प्रतियों को स्थानीय मुसलमानों में बांट दिया जाएगा ताकि अरबी न समझने वाले मुसलमान इस अनुवाद के द्वारा दीने इस्लाम को समझ सकें।

● सरकारी खर्च पर हज व उमरा करने पर हुकमे इम्तिनाई (स्थगन आदेश)

लाहौर हाई कोर्ट की रावलपिंडी बेंच ने सरकारी खर्च पर हज और उमरा अदा करने पर स्थगन आदेश देते हुए कहा कि इस उद्देश्य के लिए सरकारी धन का इस्तेमाल न करें। जस्टिस अली नवाज चौहान ने यह फैसला डा० असलम खां के प्रार्थना पत्र पर सुनाया। उन्होंने कहा कि सरकारी खर्च पर हज व उमरा पर जाना गैर कानूनी और गैर इस्लामी है क्योंकि सरकारी धनी का उपभोग निर्धन लोगों की मदद के लिए प्रयोग किया जा सकता है। अदालत ने कहा कि केवल हज सेवक और पाकिस्तान के स्वास्थ कर्मचारीही सरकारी खर्च पर हज या उमरे पर जा सकते हैं।

● मस्लकी इख्तिलाफात पर बोर्ड का मौक़िफ़ :

आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के जनरल सिक्रेटरी जनाब मौलाना निजामुद्दीन साहिब ने १२ जुलाई के एक लम्बे प्रेस रिलीज में यह भी फरमाया कि "आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड शरीअ़त के तहफ्फुज़ के लिये क़ाइम किया गया है, जिसकी जमानत शरीअ़त अप्लीलेकेशन ऐक्ट १९३७ में दी गई है। शरीअत के कवानीन व उसूल तैशुदा हैं। अगर्चि बाज़ मसाइल में मुख्तलिफ मसालिक के दर्मियान कुछ आरा मुख्तलिफ हैं, लेकिन बोर्ड में सभी मसालिक ने नुमाइन्दे शरीक हैं और मस्लकी इख्तिलाफात की बुन्याद पर मिम्बरान के दर्मियान कभी यह कोशिश नहीं की गई कि किसी एक मस्लक को दूसरे मस्लक पर फौकीयत दी जाए या एक मस्लक के मानने वालों को दूसरे मस्लक के मानने पर मजबूर किया जाए। (राष्ट्रीय सहारा उर्दू के शुक्रिये के साथ)

> किसी की बुराई मत करो
> अपने भाई का भला चाहो।